

३ नं

९



एक हरिजन था उसने वर्योतिक बहुत ज्ञान प्राप्त किया
 था, बहुत भक्तिकी थी और खूब भगवान का ध्यान धरा था। वृद्धा
 पे मे वह भक्त अंधा होगया और उसकी गांठों में बाई धरगयी। ई
 ससे उसे खाट पर पड़ा रहना पड़ता था। ईसके सिवा उसके पैरों में
 बड़ा दर्द होता था। परन्तु वह भक्त बड़ी ही शान्ति से रहता था। उस
 से मिलने के लिये एक दिन कोई और भक्त आया। वह कहने ल
 गा कि हे हरिजन। तुम तो आजकल आजकल बहुत दुःखी दि
 खाई देते हो। बीमार भक्त ने कहा कि भाई भगवान ने जो किया
 है वह बहुत ही अच्छा है। भगवान ने मुझे आखें दी थी ईससे मैं
 ने वर्यो अच्ची अच्ची पुस्तकें पढ़ी और अच्ची अच्ची चीजें देखी
 । मेरे पैर भी भगवान ने ही दिये हैं ईससे मैं बहुत गह घुम आया
 हूँ और बहुत रे काम किये हैं वह सब उसी ने दिया था और फिर
 उसी ने लो लिया है, ईसमें मेरा कुछ न था। ईसलिये मेरे अक्ल
 सोसकरने का कोई कारण ही है। हम भगवान से अच्छी अ
 च्ची चीजें पाकर प्रसन्न होते होते हैं न व उसकी ईच्छा से या प्रार
 ण्य व शाकुद्ध समय के लिये बीमारी आजाये तो उसे भी शान्ति
 से भोग लेना चाहिये। ईससे नाराज न होना चाहिये और जे
 से भगवान रखे उसी में प्रसन्न रहना चाहिये और ऐसा विचार
 करना चाहिये कि हम जे से प्रभु से अच्छी अच्ची चीजें बहुत उ
 भय से लेते हैं वे से न लूचने वाली बीमारी या मोन आजा सतो उसे
 भी उसकी ईच्छा से आशीर्वाद जानकर प्रसन्ना पूर्वक भोगने
 चाहिये। यही हरिजनो को सच्चा धर्म है और यही भक्तो की
 परीक्षा का समय है ऐसे समय जान बुझ कर अवश्य धीरजर
 रखना चाहिये और यथा शक्ति शान्ति से रहना सीखना चाहि
 ये। यह सुनकर मिलने को आया हुआ भक्त कहने लगा कि तुम धन्य
 हो कि ऐसे दुःख के समय भी ऐसा धीरजर रखते हो। तुम्हारी भ
 क्ति भी धन्य है। भाईयो। बीमारी के दुःख में हमें भी धीरजर

किन्ना धन्य है। भाई या। वा मा रा क दुःख म हम भ्रा धी र न र

१८३

ख ना चा हि ये और शा नि से रह ना सी ख ना चा हि ये।

वी मा री से मनुष्यो की प्र कृ ति का प ता

लग ता है।

सो ना ज व र वा न से नि क ल ता है त व उ स में मि डी ल गी र ह ती है। उ से ज न धो धा क र सा फ क र ते हैं और आ ग में ग पा ते है त व उ स की अ स ली क सो टी हो ती है। वे से ज व म नुष्य सु दि न में भ न्ति क र ते हैं त व उ न के अ न्द र की त्रु टि यां ठी क ठी क न हीं मा लू म प ड तीं, अ ने क प्र का र की अ नु कूल ता सं हो ने से उ न की त्रु टि यां छि प जा ती है। ज व वी मा री का व न्न आ प ड ता है त व उ न की त्रु टि यां दि र वा द दे ती है। उ स स म य वे द वे द वा ये न हीं रह स क ते औ र अ प नी प्र कृ ति त वा स्त वा व को छि पा न ही स क ते। इस से शा नि, धे र्म या अ धे र्म, आ न-द या कु फ्र और ग म र वा ने को ध क र ने की वा त सा फू तो र प र मा लू म हो जा ती है। इस त र ह वी मा री के व न्न म नुष्यो के स ज्ञा व की व ह त अ सा नी से प री क्षा हो जा ती है। इसी से व हु ते रे ह रि ज न क ह न दे कि नी ना रि य रि क्षा का स म य है। सो ने की प री क्षा जे से अ ग्नि मे हो ती है वे से ह रि ज नो की प री क्षा वी मा री मे हो ती है। य ह वा त स म ज्ञा ने के लि ये एक भ क्त क ह ते: थे कि -

२२८ एक स न्त वी मा र प ड ता। उ स का रोग व हु त दुःख दा य क था औ र व हु त पुरा ना हो ग या था। उ स स न्त के पा स एक स र भ क्त ग या औ र उ स से बो ला कि म हा रा ज। तु म तो व हु त दुःखी दि र वा द दे ने हो व हु त दि न हो ग ये तु म्हा री वी मा री न हीं जा ती। य ह दे र व क र मु शे व ड अ फ सो स हो ता है भ ग वा न तु म्हे शी घ्र आ रा म करे। तु म्हा र य ह दुःख मु श से दे र वा न हीं जा ता।

य ह सु न क र उ स वी मा र श न ने क हा कि भे या। इस का भे द तु म न हीं जा न ते। तु म्हा रे दे र व ने का च ह मा दू स रे रंग का है औ र मे री दृ ष्टि कु छ ओ र ही है। इस लि ये इस वि ष य मे तु म्हा रे ओ र मे रे वि चा र मेल न ही स क ते। तु म को य ह ज्ञा न प ड ता है कि इस वी मा री के का रण मे व हु त दुःखी हूं। पर-तु मे स म ज्ञा ता हूं कि हम भ ग वा न के हैं। इस लि ये भ ग वा न हमें दुःख न ही दे ता पर-तु

यह जो होगा उसने भेजा है वह मेरी परीक्षा के लिए है। प्रभु
 हरेखना चाहता है कि इसको माला ही पहने आता है या दुःख
 में धीरज रखना भी आता है; इसको तिलक लगाना ही आता
 है या बीमारी में भी मुझे याद करना आता है; इसको न होना भी
 ही आता है या दुःख के समय का दर्शन होना भी आता है; इ
 सको अच्छे समय में देव दर्शन करना ही आता है या भगवद्
 ईच्छा के अधीन होना भी आता है; इसको तीर्थ यात्रा करना
 ही आता है या दुःख के समय अपनी प्रकृति के समझाना भी
 आता है और इसको बाहर की भक्ति ही आती है या भीतर की भक्ति
 भक्ति है। इसकी परीक्षा लेने के लिये प्रभु ने यह होगा भेजा है। अ
 गर इस वक्त में दिलगी रहो इंकदरगाहं, निरुहा हो इ और अफ
 सोस किया कहूं तो फिर मेरी भक्ति किसे कायकी १ जो धर्म बीमा
 री में ठारसन ही देख सकता, जो धर्म दुःख में शान्ति नहीं देख सकता,
 जो धर्म किसी हालत में धीरज रखने का बल नहीं देता और जो ध
 र्म किसी दशा में भगवान की महिमा और भगवान की रूपा न
 ही समझाता वह धर्म ही का है को १ और वह भक्ति ही का है को १
 इस लिये भाई। बीमारी के कारण मुझे कुछ दुःख नहीं है वरन्
 इसको अपनी परीक्षा का समय समझकर मैं तो शान्ति में रहता
 हूं और धैर्य से बीमारी भोग ले रहा हूं।

२२६

सन्त की यह बात सुनकर उस भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ, वह
 उसका बखान करने और कहने लगा कि महारज तुमने नोग न
 व किया, तुम्हारी बातों से मुझे बहुत लाभ हुआ और तुम्हारे आ
 वरण से मैंने यह सीखा है कि मुझे भी बीमारी में तुम्हारी तर
 ह धीरज रखना चाहिये और इस बात का खास ख्याल रखना
 चाहिये कि इस परीक्षा में उतावला हो कर के लगे हो जाऊ।
 यह बात मैंने आज तुमसे सीखा है। मैं चाहता हूं कि यह पाठ मे
 रे दिल में जम जाय और आशा रखता हूं कि तुम्हारे जैसे सन्त के प्रता
 प से मुझ में बीमारी में शान्ति रखने का बल आवेगा।

सन्त ने कहा कि प्रभु दयालु है। अगर तुम से सीखावना रखे मे
 री तो मैंने एकदम से

सन्त ने कहा कि प्रभु दयालु है। अगर तुम ऐसी भावना रखोगे तो जरूर तुमको ऐसा वल मिलेगा। इसके बाद वे एक दूसरे से अलग हो गये।

६९ - बीमारी में धीरे-धीरे तब आशान्ति रखने के विषय में (४)

बहुत से कड़े दिल के आदमियों का हिया भी बीमारी से कोमल हो जाता है।

एक बड़ा राजा था। उसने राजकुमार को एक भारी पुरसित 230 के पास पढ़ने भेजा। पंडित ने उस राजकुमार को अनेक विद्या सिखायी - जैसे - राज्य करने और हुकूमत चलाने की विद्या सिखायी, प्रजा के साथ न्याय करने की विद्या सिखायी, सेना को वश में रखने की विद्या सिखायी, पिता की आज्ञा पालन करना सिखायी। इस तरह राजनीति सम्बन्धी सब विद्या सिखायी। सिखा चुकने पर वह युवराज के दरबार में ले गया और बोला कि महाराज धिराज। आपने कुमार को सब विद्या आगयी है, आप परीक्षा कर लीजिये। राजा ने युवराज की परीक्षा ली। उसमें बहुत मता के साथ उत्तीर्ण हुआ। तब राजा ने पंडित से पूछा कि कुमार को और कुछ सिखाना बाकी है? पंडित ने कहा जी हां। अभी एक चीज बाकी है। राजा ने पूछा कि वह बाकी क्यों रखते हो? सब पूरा पूरा सिखा दो तब तुमको इनाम देंगे। तब पुरसित के हालत में जो वेत की छड़ी थी उसे उसने कुमार की पीठ पर नीत चार बार जमा दिया। यह देख कर सब अमीर उस रात कित हो गये। कुमार की आशुओं में आसू आ गये और राजा भी सोच में पड़ गया कि यह क्या? उसकी को धभी आया कि भरे दरबार में मेरे सामने मेरे कुमार को पीरता है। इसके क्या मागे? पुरसित का सिर फिर गया है क्या? यह सोच कर राजा ने पंडित से पूछा कि यह तुमने क्या किया? इसका तुम्हें जवाब देना पड़ेगा। तुम्हारा प्रहनुल में बरदा

२३१

इतनी ही कर सकूंगा। पंडित ने सिर नवाकर कहा कि महाराज। यह
 ही एक चीज सिखाने को वाकी थी। वह आप के हुक्म से मेरे आज
 सिखा दी है। कुमार साहब आगे जाकर सना होने वाले हैं। उस स
 मय वह कुछ भी अपराध देखकर अपराधियों को बड़ी सजा देंगे।
 किसी को चाबुक बाना माया मारने पर उसे कितना कष्ट होता है
 इसका खाल कुमार साहब को नहीं था। परन्तु वह दूसरे को
 सजा देने समय सोच विचार सकेंगे न था। दया रखकर सजा दे
 सकेंगे। इससे वह प्रभु के रूपा पात्र हो सकेंगे। इसलिये उन्हें
 सकल के अनुभव की जरूरत थी। इसीसे मेरे इस समय उन्हें जी
 दा है। यह मुनकर राजा ने उस पंडित को बहुत ही नाम दिया और
 कुमार को भी विश्वास हो गया कि बांधो, मारो, कैद करो, फांसी
 दो, कह देना बहुत सरल है परन्तु जिसके उपर से सा गुल्म होता है
 उसे कितना कष्ट होता है इसका सच्चा अनुभव अब हुआ। वह स
 जा देने में सहाल कर काम करना गया। इससे वह न अच्छा
 जा कहलाया।

यह दुःखान्त देखकर एक सन्त यह समझाता था कि मनुष्यों का
 हिया को मल बनाने के लिये दुःख की जरूरत है और दुसरे दुःख
 से बीमारी का दुःख इस विषय में बहुत अच्छा असर करता है,
 इसीसे बीमारी का दुःख आता है। इसलिये ऐसे दुःख से दि
 लगी रुन होना चाहिये, वरंच ऐसे समय शांति से रहना सीख
 ना चाहिये।

यह बात और अच्छी तरह समझने के लिये सकल कटर का दु
 खान्त जानने योग्य है। सकल कटर बहुत बड़ा आदमी था और बहुत
 बड़े ओहदे पर था, उसके पास हर रोज बहुत से बीमार आते थे। उ
 नमें कितने ही रोगियों को मंत्र कर बीमारी के कारण बहुत कष्ट हो
 ता था। इससे वे डाक्टर से कहते कि डाक्टर साहब हमें बड़ा कष्ट
 हो रहा है। आप रूपा करके दवा बढ़ालिये। परन्तु डाक्टर सब
 रोगियों से मुखे संठके से सावनी ब करता। रोगियों को शांति

का शाब्द कहता; इससे इससे उनकी बातें सुना करता और ज
 का काम किये जाता। इसके

२६२

का शब्द न कहता; इससे इससे उन की बातें सुना करता और जरा भी उतावला न होकर हमेशा की तरह काम किये जाता। इसके बाद डाक्टर स्वयं बहुत बीमार पड़ा। उसका पेट बड़े जोर से दर्द करने लगा और कई दिन तक अच्छा न हो हुआ मुईत के बाद उसका रोग मिया। इससे उस डाक्टर की प्रशस्ति बंद लग गयी। अब वह सब रोगियों के साथ बड़े प्रेम से, धैर्य से और शीघ्रता से काम लेने लगा। यह देख कर उसके एक मित्र ने पूछा कि डाक्टर साहब आपमें ऐसा कैसे हो गया? पहले तो आप सब रोगियों को साथ निमोही जैसा बर्ताव करते थे और उन की बातें सुन कर खुश होते थे। अब उनसे ऐसा सहाय्य भुति क्यों दिखाते हैं? डाक्टर ने जवाब दिया कि पहले मैं कभी बीमार न ही पड़ा था इससे मुझे मालूम न ही था कि बीमारी में क्या क्या कष्ट होता है। मैं यही समझता था कि सब बीमार कम जोर दिल के हो जाते हैं। इससे वे झूठ मुठ हाय हाय किया करते हैं और जल्द अच्छा करे, जल्द अच्छा करे की पूकार डाक्टर के आगे मचाया करते हैं असल में कुद्वन ही होता। यह समझ कर मैं उनसे लापरवाही दिखाता था। परन्तु जब मैं बीमार पड़ा और मेरे पेट में बड़े जोर से दर्द होने लगा तब मेरी आरवे खुली कि ओहो। इतना अधिक कष्ट होता है और तिसपर भी मैं बीमारी से ऐसा सीला परवाही दिखा रहा हूँ। सच मूच यह मेरी बड़ी भारी भूल है। यह बात समझ में आ जाने पर बीमारी के बाद मेरा दिया कोमल होगया है। इससे अब मैं बीमारी को बड़ी सहाय्य भुति दिखाता हूँ और बड़े प्रेम से बर्ताव करता हूँ मुझे यह बीमारी न होती तो मैं दूसरे का दुःख समझ न सकता और मेरे दिल को कठोरता न मिलती। मेरे पेट के दर्द ने मेरा चित्त बदल दिया है और उसी समय से मैं सब बीमारों को डाक्टर हो गया हूँ।

बन्धुओ! इसी तरह बीमारी के कारण भी बहुत मनुष्यों को व

२३३ हुनत रह का काय दा हो जाता है। इस लिये बीमारी से दुःख मन
मानना बल्कि बीमारी में भी प्रभु का कुछ अच्छा उद्देश्य ^{इस} समझ कर शा
न्ति से रहना सीखना यही हमारी सलाह है।

रोग मिटाने का एक अद्भुत उपाय।

२३४ किसी किसी का रोग मिटाने के लिये हम जान बिसी अच्छे वैद्य
की सलाह लेते हैं तो वह मुख्य दो उपाय बताता है। एक संयम
और दूसरे दवा करना। संयम में हम जानते हैं कि किसी रोगी
को मिर्च तेल की मनाही की जाती है; किसी को चीनी की मना
ही की जाती है; किसी से कहा जाता है कि धीमे मन खाना; कि
सी से कहा जाता है कि दूध मत खाना और किसी रोगी को दहि
मठा आदि खड़ी चीजों की मनाही होती है। इस तरह का संयम
मालापर है ज हम जानते हैं। इसके सिवा कितना ही मानसिक
संयम होता है। परन्तु यह बात सब रोगी या बहुत से वैद्य नहीं जा
नते। जो आगे बैठे इस सन्त या सच्चे गुरु हैं अथवा जो मनुष्य प्रकृ
ति के अनुभवी वैद्य हैं वे ही यह बात जान सकते हैं। खाने पीने का सं
यम तो बहुत छोटी बात है और इसमें बहुत बड़ा लाभ हो सकता है
। परन्तु जो सच्ची बात है। जो मां के की बात है और जो जल्द लाभ
हुँचा सकती है वह कुछ और ही है। उसके लिये सन्त कहते हैं कि -

जिस आदमी से तुम्हारा वैर हो, जिस आदमी को तुम बुरा ह
चाहते हो जो आदमी तुम्हारे मन में बार बार खटकता हो और जो
असुखि कर आदमी तुम्हारी आंख पर नाचना रहता हो उसको -
अपने दुश्मन को तुम क्षमा कर दो और उस से वैर भाव न रखो।
तो नुरत ही तुम्हारा रोग मिटने लगता है। और पहले से बीमारी में
भी तुम अधिक शांति से रह सकते हो परन्तु दुश्मन को मर भु
व माफ कर देना बहुत मुश्किल है। यह कर दिखाना आने तो उस
का काय दा भी बहुत है। इसके सिवा और एक संयम होता है। भिन्न
२३४ भिन्न मनुष्यों में दिये हुए किसी किसी के बड़े बड़े पाप होते हैं। जे

से - किसी में चोरी करने का पाप होता है; किसी में बे भिचार का पा
प होता है; किसी में लोभ का पाप होता है; किसी में लोभ का

से- किसी में चोरी करने का पाप होता है; किसी में बे भिचार का पाप होता है; किसी में झूठ बोलने का पाप होता है; किसी में लोभ का पाप होता है; किसी में क्रोध का पाप होता है; और किसी में डाँट का पाप होता है। जिस पाप में आदमी स्वयं फँसना हो उस पाप को छोड़ देने की प्रतिज्ञा अपनी बीमारी के बल करे तो उस को बीमारी में बहुत बड़ा ठारस मिल जाता है और वह शांति में रहता है तथा उसका रोग बहुत जल्दी से मिटने लगता है। परन्तु इसमें शक्ति है कि पाप त्यागने की प्रतिज्ञा पालन करना चाहिये और जिन्दगी भर उसका रक्खाल रहना चाहिये। ऐसा किया जाय तो बीमारी में बड़ी शांति मिल सकती है। इस लिये जिससे बचपड़े उनको चाहिये कि प्रकृति कठपाय से इस सत्य को आजमावे और इससे बहुत लाभ उठावे तथा यह विषय अपने सगे सम्बन्धि यों और मित्रों को समझावे। ऐसा करने में बड़ा पुराय है। मोबीमारी में शांति से रहने के लिये पाप त्यागने की प्रतिज्ञा करो। पाप त्यागने की प्रतिज्ञा करो।

पुराय करने से पाप घटता है और आयु बढ़ती है यह हम लोग मानते हैं। इससे जब को आदमी बीमार पड़ता है तब उस के सगे सम्बन्धी उससे दान कराने लगते हैं। जैसे- उस समय गोदान करने हैं, ब्राह्मण भोजन कराने हैं, कुटुम्ब के सगे सम्बन्धी यथाशक्ति मदद करते हैं, गाँवों को चारा देते हैं, बालकों को खिलाते हैं यदि रो में सीधा तथा दक्षिणा भिजवाते हैं और गुरु को भेंट निकालते हैं। यह सब करने का मूल उद्देश्य यह है कि पुराय करने से पाप घटता है और पाप घटने से बीमारी मिट जाती है।

बन्धुओ। यह कुछ नया विचार नहीं है, यह तो बहुत पुराने समय का सिद्धान्त है। इसी उन्नत सिद्धान्त के आधार पर महात्मक कहते हैं कि पाप त्यागने से बीमारी मिट सकती है और आयु बढ़ सकती है। अपने हृदय में पड़ा गुप्त पाप त्यागने से या जिस आदमी ने हमारी पुराई की है उसको क्षमा कर देने से बीमारी घट जाती है और बीमारी में भी आदमी शांति से रह सकता है।

हा

। सो वीमारी से शान्ति से रहने के लिये पाप त्यागने की प्रतिज्ञा करना चाहिये। सैकड़ों दवाएं जितना कायदा कर सकती हैं, उससे अधिक दवा पाप त्यागने से हो सकता है। अमर वीमारी को जल्द मिटाता हो और वीमारी में भी सच्ची शान्ति पानी हो तो जो सेवने वाले अपने हृदय में मौजूद पाप को त्यागने की प्रतिज्ञा की जिये तथा सच को ध्याना की जिये और यथाशक्ति परमार्थ की जिये। तब बहुत जल्द वीमारी दूर हो सकेगी।

७० - संसारी लोग दोरी दोरी बातों में भी बहुत ममता रखते हैं; परन्तु जो भक्त हैं वे शूरी ममता नहीं करते बरंच दुसरो से मिल जाते हैं।

भक्तों और संसारिक मनुष्यों में बहुत कुछ अन्तर होता है। जैसे - जो संसारी आदमी है वे दोरी दोरी बातों के लिये वाद-विवाद किया करते हैं; दोरी दोरी बातों में लड़पड़ते हैं और जिसमें कुछ दम नहीं होता उसमें भी अपनी जिद रखना चाहते हैं। परन्तु जो भक्त होते हैं वे भीतर से पिछले हुए होते हैं; जो भक्त होते हैं वे सबके साथ सलूकर रखते हैं; जो भक्त होते हैं वे सच्ची वस्तु के पक्ष में खड़े होते हैं; जो भक्त होते हैं वे आदर्श मान की ईर्ष्या को अंकुश में रख सकते हैं; जो भक्त होते हैं वे बड़ी और छोटी वस्तु का विचार कर सकते हैं; जो भक्त होते हैं वे संसारी लोगों की अनेक प्रकार की भूलें माफ कर सकते हैं; जो भक्त होते हैं उनके हृदय में कुछ बड़ी खुशियां आ जाती हैं और जो भक्त होते हैं उनका मन बहुत ठंड़ी वस्तुओं में ही लगा रहता है। इससे जगत के छोटे छोटे विषयों के लिये वाद-विवाद करने या ममता रखने को उन्हें फुर्सत ही नहीं होती। और ऐसे कामों में कुछ दम भी नहीं जान पड़ता। परन्तु जो संसारी लोग हैं, जो मोहवादी लोग हैं, जो अज्ञानी लोग हैं और जो अपने शोक की दोरी दोरी बातों में ही लिपटे रहने वाले हैं तथा उसी में आनन्द मानने वाले हैं वे लोग छोटे छोटे मतभेद के कारण लड़ जाते हैं। इसका कारण यह है कि व्यवहार में बहुत चतुराई होने पर

भी मतभेद सह लेने में दूसरों के संग निवाह ले जाते हैं, सब शूरी ममता के तथ्याग रखने के विषय में वे ठीक बालक के ऐसे होते हैं।

भी मत भेद सह लेने में दूसरे के संग निवाह ले जाने में, मय झूठ
समझने में तथा गम खाने के विषय में वे ही कालक के से से हो
ते हैं। इससे दो टी दो टी बातों में भी अभिमान कि या करते हैं और
इससे मत भेद के कारण भी वे एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। य
ह बात अच्छी तरह समझाने के लिये एक भक्त राजमहाराज कह
ते थे कि -

एक छोटा सा लडका था। वह सदा अपने बाप के साथ खाने बैठता
था। एक दिन उस लडके ने अपने बाप से कहा कि आज तुम मुझे अपने
साथ घूमने नहीं लिवाले गये इससे अब मैं तुम्हारा साथ बैठकर नहीं
रहा उगा। लडके की यह बात सुनकर बाप ने कहा कि आज एक बड़न
जरूरी काम था और वहां तुम्हें ले जाना भी नहीं था। कल तुम्हें जरूर
ले चलुंगा। लडके ने कहा कि नहीं आज तुम मुझे अपने साथ नहीं
ले गये इस लिये मैं तुम्हारे साथ नहीं खा उगा। पिता ने उसके वह
न समझाया परन्तु हठील लडके ने कुछ नहीं समझा। तब उसके बा
प ने कहा कि तुम मेरे साथ नहीं बैठते हो तो तो मैं तुम्हारे साथ बैठ
ता हूँ। यह कहकर उसने लडके को अपनी जगह पर बिठाया और
आप जहां लडका बैठता था वहां बैठा। लडका राजी हो गया। उस
ने समझा कि बाबूजी मेरे साथ बैठे हैं मैं हमें ही की तरह बाबूजी के
साथ नहीं बैठता हूँ। यह समझकर वह खुस हुआ और सगता मिठ
गया।

इसी तरह जो उदार चित्त के आदमी हैं जो भले आदमी हैं और
जो शान्ति चाहने वाले हैं वे कुछ अपनी ही बात नहीं रखना चाहते
बल्कि यही चाहते हैं कि जैसे हो वैसे अच्छा काम आगे बढ़े यश चा
हे किसी को मिले। वे अपनी प्रतिष्ठा के भूखे नहीं रहते। प्रतिष्ठा
का खिलौना वे दूसरों के लिये रख देते हैं और स्वयं अपने प्रभु
के लिये अपना कर्तव्य भली भाँति पालन करते हैं।

भाईयो! अगर इस तरह निवाह ले जाना आवे, इस तरह सुल
झाकर लेना आवे, इस तरह गम खा ना आवे और इस तरह मन की

उदारता रखना आवे तो अपने घर में, पड़ोस में, महल्ले में, गाँव में
 विरादरी में और देहा में कितने ही झगड़े भिरजायें और कितनी
 शान्ति फैली रहे जरा इसका तो विचार कीजिये। इन सब की कुं
 जी यही है कि अपना में पत घटवे, सामने के आदमी को बड़ प्य न दे
 उसको अगुआ बनावे और आप अपनी ममता छोड़कर उससे मि
 ल जायें। अगर इतना करना आवे तो अपनी और दूसरे बहुत आ
 दमिया की भलाई हो सकती है और इससे प्रभु प्रसन्न रहता है। इ
 स लिये भाईयो। छोटे छोटे मतभेद दूर करके दूसरों के साथ मिल
 जाइये और उनको बड़ा बनाइये। तब जगत से बहुत कुछ झगडा
 घट जायगा, इसमें तनिक सन्देह नहीं। लड़का आपके पास खाने
 न बैठे तो आप उसके पास खाने बैठ जाइये। मतलब यह कि किसी
 तरह कलह कम कीजिये। यही प्रभु की इच्छा है और यही हरिज
 नो का धर्म है।

७१ - सच्चे भक्तों का लक्षणा।

सच्चे भक्तों के लक्षण जान लेने से हमारी भक्ति बलवान होती
 है और भक्तिके रास्ते में किसी जगह को ई छोटी मोटी भूल हो
 ती हो तो महान भक्तों के लक्षण जान लेने से किसी वक्त अप
 नी भूल पकड़ी जा सकती है। इस लिये उंचे दरजे के भावुक
 भक्तों के लक्षण जान लेना चाहिये। इसके बारे में सन्त कह
 ते हैं कि -

जो ईश्वर के अनन्य भक्त होते हैं वे कभी अपने मन में शीख
 ते नहीं और किसी प्रकार की बड़ी चिन्ता करते। इसके सिवा
 हरदशा में सतोष से रह सकते हैं। व्यवहार की कठिनाई को
 से वे अपने मन को असन्तोषी नहीं होने देते; हरजगह और हर
 हालत में आनन्द से रहते हैं और कभी कुछ बुरा हो जाय तो भी य
 ही समझते हैं कि हमारा नाश जो करता है वह अच्छा ही करता है
 ऐसी समझ होने के कारण अगर कभी धन बिता जाय, कोई कु

दुम्बी मर जाय या अपनी देह पड़ जाय तो भी उनको अप्सोस
 न होवे। वे हमेशा आनन्द से रह सकते

दुःस्वी मर जाय या अपनी देह पड़ जाय तो भी उनको अप्सोस
 नहीं होता। ऐसी आकृत के प्रसङ्ग में भी वे आनन्द से रह सकते
 हैं, वे अपने मन में यह समझते हैं कि इन सब दुःखों का कारण
 अभी हमारी समझ में नहीं आता परन्तु इसमें हमारे नाथ का
 कोई अच्छा उद्देश्य होगा। हम अपनी भलाई जितनी समझ
 ते हैं उससे अधिक वह समझता है। इसके सिवा अनन्त प्रह्लाद
 का नाथ सर्व शक्तिमान आनन्द स्वरूप प्रभु की अपनी भक्तों
 का कुरा नहीं करता। इस लिये अभी इस किस्म के दुःख अगर
 दुःख दायी लगें तो भी असल में वे दुःख दायी नहीं हैं वरंच
 मारी भूतों के लिये ही हैं और हमारे प्रभु की ईच्छा से ही हमारे उ
 पर आये हैं। इस लिये हमें माथे चढ़ाते नाचाहिय ऐसी समझ
 होने से सेवक दुःख के समक्ष भी महा भक्त आनन्द में रहते हैं
 वे भगवद् ईच्छा को बदलना नहीं चाहते। वरंच भगवद् ईच्छा
 के अनुसार अपनी ईच्छा को बदलना चाहते हैं। सारांश यह कि
 जैसे जैसे उखलने वाला आदमी अपनी ईच्छा अनुसार गेंद डाल
 ता है वैसे सच्चे भक्त प्रभु के हाथ के गेंद बन जाते हैं और जैसे प्रभु
 उनको बलाना है वैसे चलते हैं। ऐसे उंचे भक्त इस प्रकार प्रभु की
 ईच्छा के अधीन होते हैं, यहाँ तक कि प्रभु की ईच्छा ही उनकी ईच्छा
 होनी है। इसके सिवा अपने मतलब की कोई ईच्छा उनके मन में उ
 ठनी ही नहीं। ऐसे सच्चे भक्तों की वासना संक्षय हो जाती है ओ
 र उनका अहंकार मर जाता है। इससे ऐसे भक्तों को हरिजन मर
 जीवा कहते हैं तथा कितने आदमी ऐसे भक्तों को अपित भक्त कह
 ते हैं। ऐसी कोई ही हम सच्चा भक्त कहते हैं।

ऐसे सच्चे भक्तों की शिनिभान्ति लक्षणा तथा आचार विचार
 समझने से हमारी आंखों का परदा उधड़ जाता है। इस लिये
 सच्चे भक्तों के हृदय की स्थिति कुछ और समझने की रूपा की
 जिये।

नमक हलाल नौकर जैसे अपने मालिक के हुक्म की वाट देखा
 करता है वैसे सच्चे भक्त अपने प्रभु के हुक्म की वाट देखा करते हैं ओ

र. स. म. र्थ. प्र. भु. जो. सु. ख. दुः. ख. भे. जे. उ. से. भो. ग. ले. को. स. दा. त. प्या. र. रह. ते. हैं.। ऐ. सी. स्थि. ति. को. कि. त. ने. आ. द. मी. अधी. न. ता. कह. ते. हैं.। ऐ. सि. म. श्री. अधी. न. ता. स. श्रे. भ. क्त. में. ही. हो. ती. है.।

२४० चि. ते. रे. के. हा. थ. की. नू. ली. जे. से. वह. फेर. ता. है.। वैसे. फिर. ती. है.। ओ. र. छु. उस. वार. छो. डे. को. अप. नी. मर. जी. मु. ता. वि. क. ब. ला. ता. है.। वैसे. स. श्रे. भ. क्त. स. दा. ई. श्वर. की. ई. च्छा. के. अधी. न. रह. कर. अप. नी. जि. न्दगी. वि. ता. ते. हैं.।

पी. मार. आ. द. मी. जे. से. वै. द्य. की. क. ड. वी. द. वा. भी. खु. शी. से. खा. ते. हैं.। वै. से. स. श्रे. भ. क्त. अप. ने. ज. भ. ज. भा. तर. का. पा. प. क. ट. ने. के. लि. ये. भ. ग. वा. न. के. भे. जे. दु. ख. दुः. ख. को. सु. शी. से. भो. ग. ले. ते. हैं.। वे. दुः. ख. को. दुः. ख. न. ही. मा. न. ते. वर. च. भ. ग. व. दु. ई. च्छा. स. म. झ. ने. हैं.। इस. से. जे. से. अ. च्छे. हो. ने. की. आ. शा. से. पी. मार. आ. द. मी. क. ड. वी. द. वा. पी. ना. ते. हैं.। वैसे. स. श्रे. भ. क्त. भी. अप. ने. उ. पर. आ. प. डे. दु. ख. दुः. ख. को. खु. शी. से. भो. ग. ले. ते. हैं.।

ऐ. से. म. हा. न. भ. क्त. अप. ने. हृ. दय. में. खु. ब. अ. च्छी. तर. रह. व. रु. स. म. झ. ने. हैं.। कि. जे. से. सो. ना. आ. ग. में. त. पा. व. वि. ना. डी. क. ठी. क. न. ही. मा. ना. जा. ता. वै. से. दुः. ख. में. हो. कर. ग. य. वि. ना. भ. क्ति. की. अस. ली. पार. ख. न. ही. हो. नी.। व. ह. स. म. झ. कर. वै. व. डे. व. डे. दुः. ख. से. भी. नि. रा. श. न. ही. हो. ते.।

व. ड. ई. ल. क. डी. पर. व. मु. ला. च. ला. ती. है.। लो. हर. दे. द. में. कू. ध. रू. वी. हो. ती. है.। ओ. र. हर. वार. से. ल. क. डी. अ. धि. क. सा. फू. हो. ती. जा. ती. है.। तथा. अ. धि. क. उ. प. यो. गी. बन. ती. जा. ती. है.। वैसे. जो. उ. त. म. भ. क्त. है.। वै. य. ह. स. म. झ. ने. हैं.। कि. हम. पर. दुः. ख. की. जो. चो. छे. प. ड. ती. है.। वै. हमारे. सु. ख. के. लि. ये. ही. हो. ती. है.। क्यो. कि. हम. ज. ड. ल. क. डी. से. उ. त. म. म. दु. ख. है.। ओ. र. अ. ज्ञा. न. व. ड.। हि. से. हम. रा. प्र. भु. स. र्व. भ. है.। तथा. स. र्व. श. क्ति. मा. न. है.। इस. लि. य. उस. की. चो. छे. में. अ. ति. श. ब. रू. वी. हो. गी. ही.। यह. स. म. झ. कर. स. श्रे. भ. क्त. भ. ग. व. दु. ई. च्छा. से. आ. प. डे. दु. ख. दुः. ख. से. क. भी. दि. ल. गी. ही. हो. ते.।

ते.

उ. ल. टी. ह. वा. हो. तो. दु. सरे. को. ख. रा. व. लग. ती. है.। पर. न्तु. यह. ह. वा. पे.

२४१ उलटी हवा हो तो दूसरे को खराब लगती है परन्तु यह हवा पे
 दियों को उंचे उडने में उल्टे मददगार हो जाती है। वैसे अज्ञान
 लोगो को दुःख से अफसोस हो तो दूसरी बात है परन्तु भक्तो को
 तो भगवद् ईश्वर से आपड़ा हुआ दुःख और प्रभु के निकट ले जा
 ने वाला बन जाता है। इससे वे दुःख से अफसोस न ही करते व
 ल्कि आनन्द लेते जात पडते हैं।

वन्धुओ। हम में जो अभी ऐसा गुण नहीं दिखता ईश्वर
 का कारण यह है कि हमारा विश्वास अभी ठीका है और हम प्र
 भु के लिये जपतप ध्यान दान आदि नितना करना चाहिये उत
 न ही करते। इससे हम में महान गुण खिलने नहीं पाता
 । अगर सच्चा भक्त होना हो और ऐसे महान गुण को बमकाना हो
 तो सदा ईश्वर के निकट रहना सिखना चाहिये और ईश्वर के नि
 कट रहने के लिये उत्तम भक्तों की संगत में रहने की कोशिश क
 रना चाहिये। ऐसे महान भक्तों के बल से, उनके संग से हमारा जी
 व भी ईश्वर से जुड़ा रहता है। इससे जप, ध्यान, दान, क्षमा आदि
 भक्ति के साधन बढ़ते जाते हैं और आगे जाकर महान भक्त हो
 सकते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप सब भक्तों के लक्षण सम
 झकर वैसे ही होने की कोशिश कीजिये।

७२ - भक्त होने के माने क्या।

२४२ भक्त भक्त सब लोग कहते हैं परन्तु यह बात बहुत कम आदमी
 समझते हैं कि भक्त माने क्या ? भक्त के सा होता है और भक्त होने
 के लिये क्या करना चाहिये। यह समझाने के लिये सन कहते हैं कि
 भक्त होने के माने पुराने सांसारिक विचार त्याग कर प्रभु के नये
 विचारों आना; भक्त होने के माने दानत माखू चाय भांग गो गो आ
 दि पुराने व्यसन छोड़ कर भजन, कीर्तन, नाम स्मरण, पाठ पुजा
 आदि नये व्यसनों में जाना; भक्त होने के माने यह हो की पुरी टेवन
 धा खराब स्वभाव छोड़ कर अच्छी टेवत था अच्छे स्वभाव वाला बन

ना; भक्त होने के माने मोह की बात सुनाने वाले तथा दुनिया
 दाही के उपरि मोह हो कर रख द्यो डने वाले मित्रों को बिदा
 कर के हरिजनो; भक्तो, सतो तथा जहात्मा ओ से मित्रता क
 रना; भक्त होने के माने फिसला हर के तथा गटे की चढ के प्र
 पंची रास्ते से निकल कर सीधी सडक समान ईश्वरी राजमार्ग
 पर चलना; भक्त होने के माने भोडा देकर बहुत कहने, घाल
 मेल करने और पानी पिला कर बीक सगि कालने वाले पुराने
 मालिक को छोड कर नया की बर्बा करने वा हो उदार मन वा
 ले नये मालिक की नौ करी में दाखिल होना; भक्त होने के मा
 ने देहाती गुरु के हां हजूर के भय से निकल कर राजाओं के
 महाराजाधिराज के राज्य में रहना और उसके कानून मानना;
 भक्त होने के माने दुनिया को छोडना नहीं, वरंच दुनिया में रह
 कर उसमें लिप्त न होना; भक्त होने के माने पुराने कर्मों के बंध
 न से दूर जाना और फिर नय कर्मों के बंधन में न पडना; भक्त हो
 ने के माने देह में रहने हुए भी उससे आत्मिक बल से छुड़ा हो
 जाना; भक्त होने के माने जे से चौकीदार बाहर पहरा देना है, वे
 से भी तरह पहरा देना और अन्तः करण में निरुद्ध विचारों को छु
 सने न देना; भक्त होने के माने खराब जगह से होकर माने पर भी
 से साबने रहना कि आंच न लगे; भक्त होने के माने जगत के व्यव
 हाही आदमियों से अनेक विषयों में अधिक बल प्राप्त करना; भ
 क्त होने के माने अनेक प्रकार के दुःखों से दूर होना; भक्त होने के मा
 ने जगत की हर एक वस्तु से उचे दरजे का आनंद लेना; भक्त
 होने के माने सब जीवों को अपने समान समझना; भक्त होने
 के माने सब तरफ के जापों से दूर रहना; भक्त होने के माने श
 रीर पर, इंद्रियो पर और मन पर स्वा मित्र चलाना; भक्त होने
 के माने प्रभु के नियमों का ठोस रूप से चलना; भक्त होने के माने महात्मा
 से के ओ को कदम कदम चलना; भक्त होने के माने जगत में शा
 न्ति फैलाने वाला बनना; भक्त होने के माने अनेक वस्तुओं में और

२४३

अनेक प्रसंगों में गमरवाना सीखना; भक्त होने के माने पुराने ज
 से के ओ को कदम कदम चलना; भक्त होने के माने

अनेक प्रसंगों में गम खाता सीखता; भक्त होते के माने पुराने जमाने की कुठें गिरहन सहन बंदल डालता; भक्त होते के माने जगत में सब को मित्र होता; भक्त होते के माने अगवाव की ईच्छा उसार चलने वाला होता; भक्त होते के माने सारी लोगो के ननिगल सकने योग्य कडवा घुंटा पी जाता; भक्त होते के माने दूसरों के दुख से दुखी होता; भक्त होते के माने जगत में प्रभु की महिमा बढाता और भक्त होते के माने प्रभु के मान और प्रेम से शांत रहता और दुख में मग्न रहता। ऐसी स्थिति वा ले को ऐसे वर्तमान ले को और ऐसी रहन सहन बाले को ह म भक्त कहते हैं और हे भाई वहनो। ऐसे प्रभु प्रेमी भक्त होने के लिये हम आपसे विनती करते हैं।

७३- व्यवहारी लोगों और भक्तों में जो अंतर है उसका खुलासा।

जो व्यवहार चतुर समझे आदमी होते हैं वे अपनी हर बात का हिसाब ठीक ठीक रखते हैं। जैसे - व्यापारी अपने खर्च का हिसाब लिखते हैं। उसमें लिखते हैं कि आज अठाई आने की तरकारी, चार आने के केले, दो आने द्रा म गाड़ी में एक रुप साध मा भिखाने, आठ आने का तेल, अठाई रुप से का घी, दू आने की चीनी उठ रुप से की धोती, सत्रारुप से सिलाई मजदूरी वारह आने घड़ी की मरम्मत। इस तरह अपना सौ करोड़ का खर्च लिखते हैं।

जैसे व्यापारी हिसाब रखते हैं वैसे विद्वान भी अपना काम का जवाब देने की जरूरत रखते हैं। उसमें सौजन्य सचा लिखते हैं कि -

आज रमावाई कन्याशाला देखने गये थे। वहा का काम ठीक ठीक चलता है। अगले रविवार को सोशन फ्रेंड्स में जाना है वहां शर्मा जी का व्याख्यात होगा। दूसरे दिन लिखते हैं कि आज कल की शिक्षा पर एक निबंध लिखता हूँ उसके खाई राट

(१) शिक्षा से उन्नत पन बढता जाता है।

(२) शिक्षा से झूठी न जाकत आती जाती है।

(३) शिक्षा से अभिमान या झूठी शेखी बढती जाती है।

(४) शिक्षा से कुटुम्ब स्नेह बढता जाता है।

(4) शिक्षा से शिक्षा मिलने पर श्री. से नगर रुकने की लिया
कम न ही आती।

(६) शिक्षासे मगज खिलना है मगर हृदय नहीं खिलना।

(१) शिक्षा से बहुत से पुरुष विषय जानने जानते हैं परन्तु कि सीरुक्त विषय में पूरी पूरी जानकारी नहीं होती ।

(८) शिक्षा के दो स्तरों पर रूख जाता है ओर उससे थोड़ी उमर में मृत्यु होती है।

यह सब आजकल की शिक्षा में हो गई है, उस पर एक निबन्ध
लिखना है। इस प्रकार अपनी जायगी में ले कर खते हो कि रती से
दिन जायगी में लिखते हो कि।

आज अनायास दे खने गये थे। हमारी समझ में उपर से जैसा दिखाया जाता है वैसा भी तब से उटकर काम नहीं होता। ई २४५ सके लिये स्वामी जी से कहना होगा। पिछे किसी ओर दिन लिखते हैं कि लोग भ्रष्टा भ्रष्टा। चिन्ता सा करते हैं। परन्तु अभी व के भ्रष्टा की बात ठीक ठीक मेरी समझ में नहीं आयी। इस लिये भ्रष्टा सम्बन्धी पुस्तक पढ़नी चाहिये।

है ते है ते जो व वि वा न कि य इ करते हैं । सब को अपने अपने
जान के अनुसार और काम के अनुसार हिसावर खता जाता है ।

पारिडित्त था. व्यवहार चतुष्टय मुख्य जाह्ना 5 पर लिखे अनुसार
रनोट करते हैं. वही अज्ञानी और मोहवादी मुख्य के से और कहें
हिसाब रखते हैं. यह आपको मालूम है ?

हि साध रखने हैं ब्रह्म आपका मो लूम है ।
 वे का गज पट्ट न हीं वरें व अपने अन्तः करुण मे नोट कर रखने हैं
 और बास कर के अर्ध का मो की न हीं व लिक व हुन कर के रख रख
 का मो को नोट कर रहे हैं । जैसे—

कोई कोई स्त्रियां अपने मन में यह याद रखती हैं कि कसा रीबि
रा. द ही की फलानी ओरत; जब मेरा लडका गुजर गया तब पुकारक
रने न ही आयी थी। मेरा बानि जब सप्तम दिन के लडका होने की वधा

है देने गया था तब वहाँ बालोने वालों में पूरा खीन ही परोसा था;
 कुल का दिया था। मैं जब अपनी सास से लडती थी तब सास का
 पक्ष लेकर मेरा परोसितने मुझे कड़ी बात कहती वरु में जमजर नहीं
 भुलुंगी। मेरा लडका तीन वर्ष का था तब पड़ोसिन के धके से सीछी
 पर से गिर पडा था; इस बात को आज तीस वर्ष हुए परन्तु अभी तक मे
 रे मन में वह दाग न ही गया। मैं जब ब्याहे आयी थी तब मेरे साडी
 एक दिन अपनी ननद को पहने के लिये दी थी। उस के तेल का दा
 ग पड गया। मैंने उलहना दिया तो वह छत ऊँ हो के केवल ले मु
 झ से लड के डी तब से क ई पुग की तग से परन्तु उस साडी में पडे हु
 ए दाग की बात मैं नहीं भूलती। एक दिन मेरे घर का प्रहरी भोज भाउ
 स में रवी रक्षा तसला उलट गया और लडकी थाली में चीटियाँ चढ
 गयी। उस समय मेरे घर सात वर्ष की थी परन्तु मेरे पाते मुझे अ
 भीत कया द है। ऐसी ऐसी याददाइते अपने अन्तः करण में
 नोट कर रखती है। परन्तु इस का परिणाम क्या है? और ऐसा
 कुडा कर्कट हृदय मे क्यों भर रहा जाय इस का विचार नही
 आता इस का कारण यह है कि वे इस की खरा बिक्री को नहीं स
 मझती।

देखिय कि विद्वान कुछ और ठुकी याद रखते है और सं
 सारी लोग कुछ और ठुंग की याद रखते है; परन्तु जो सच्चे भ
 क्त है वे किसी प्रकार की याद न ही रखते क्यों कि उस से नभी
 न कभी किलीन किसी तरह अहाचल पड जाती है

ऐसी याद से कर्म का बन्धन उलझता जाता है; ऐसी याद से मो
 ह बढता जाता है; ऐसी याद से हृदय मोध का लगता जाता है; ऐ
 सी याद से मे पत बढता जाता है और ऐसी याद से राग द्वेष वग
 ना जाता है। इस से न क अपने स्वयं का हिसाब बही न ही लि
 खते और न अपने अहं का मोत भा दूसरों के बुरे कामों की याद
 दाइत अपने अन्तः करण में रखते। वे तो अपने शुभ कर्मों को
 प्रभु के दरबार में नोट होने देते है; चित्र गुप्त के वही खाते में अप
 ने कर्मों को नोट होने देते है वे निलेप होते है। वे अपने शुभ अ
 न्तः करण से यह सोचते है कि हमारी ओ का न क्या है हम क्या

२४५

२५

रस करने हैं और कभी कुछ कर भी सके तो इसमें आश्चर्य क्या है? हम जो कुछ करते हैं अपने गोप की सत्ता से ही करते हैं और उस की इच्छा से ही करते हैं। इसमें हमारा क्या है कि हम अपनी ओर से नोट करें? दूसरे जो ऐसे गुरु हैं जो कुछ शास्त्रि-प्राप्त आप के भक्त हैं वे किसी भी उराई तो करने नहीं। इससे उन्हें इस कि याद दार रखने की जरूरत ही नहीं पड़ती और कुछ भला हुआ काम करने का भय हो जाय तो वह ईश्वर के लिये ही होता है। इससे उसको नोट करने की भी की ईश्वर त ही पड़ती, भक्त रूप में से की या अपने भले कामों की याद दार इतनी रखते इससे इसका हृदय उत्तम रहता है। इनके काम का हिस्सा ईश्वर के दरबार में रख जाता है। इस लिये भाई को। अगर सच्चा भक्त होना होता है तो ऐसा कीजिये कि आप के काम ईश्वर के दरबार में लिखे जायें और आप निर्विघ्न होकर किरें। तभी सच्ची भक्ति हो सकेगी और आप तभी सच्चे भक्त बन सकेंगे। छोटी छोटी बातों की याद दार मन में भर रखने से कोई भक्त नहीं हो सकता सहवात याद रखना। इस लिये इस बात की समझाल रखना कि छोटी छोटी बातों को भूल में ही न रह जायें।

७४- भक्ति में एक ही जगह न पड़े रहकर हरे जग आगे बढ़ना चाहिये।

जो आरम्भ के भक्त हैं वे बहुत थोड़ी देर जप कर सकते हैं थोड़ी देर ध्यान कर सकते हैं, थोड़ा दान दे सकते हैं और अपने मन को थोड़ी देर वृथा में रख सकते हैं। इससे उनको अफसोस न करना चाहिये और इन समय सतत चाहिये कि प्रभु की हमारे ऊपर थोड़ी कृपा है। वाप को जैसे कमा उबाल लडका पारा लगता है वैसे न कमाने वाला छोटा लडका भी पारा लगता है। वल्कि बड़े लडके से छोटे लडके पर ही वाप का प्रेम अधिक होता है। ई

सीतरह याद रखना कि जो न सच्चा भक्त है जो शुरु के भक्त है और जो

२४५ न सच्चा भक्त है न सच्चा भक्त को अधिक कृपा होती है और न प्रभु को

हैं वे से न कमाने वाला हो या लड़का भी प्यार लगता है। बालक
बड़े लड़के से छोटे लड़के पर ही वाप का प्रेम अधिक होता है।

२०९

२४८ सीतरह का दरबाना कि जो न से मरत है जो शुरू के मरत है और जो
कच्चे मरत है उन पर प्रभु को अधिक रुपा होती है और वे प्रभु को
अधिक प्यार लगते हैं। जो बहुत आगे बैठे हुए मरत है उन को
भक्ति से आनन्द मिल गया होता है। उन को भक्ति का असर हुआ
रहता है, वे प्रभु की महिमा समझ रहे होते हैं और वे भक्तिके चमत्कार
का अनुभव कर रहे हैं। इससे वे बहुत जोर शोर से और बहुत
तपस से भक्ति करते तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु जो न सि
ख मरत है वे दुनिया दारी का मोह छटा कर भक्ति करते तो वही बहुत
है, वे अपने जंजाल तथा अज्ञान साधियों से दुरकार पा कर भक्ति
करे तो सही बहुत है और अभी न ये नये हो गये भक्ति से आनन्द
मिलता हो तो भी जरूर भक्तिको पकड़ रखे और थोड़ी बहुत भी
भक्ति करे तो सही बहुत है। ऐसे नये भक्तों पर प्रभु अधिक प्रस
न्न रहता है। इसलिये अगर आरम्भ में थोड़ा मजत होता हो तो स
हजसम झना कि हम प्रभु के कम प्यारे हैं वरंच हम समझना कि ई
स समय भी प्रभु की हम पर बहुत बड़ी रुपा है। परन्तु इसमें ईकड़ा
नहीं है। बालक सदा बालक बनारहे बुद्धि से, कदम और आचार विचार
रमें भी बालक ही रहना चाहता है लड़का चापको न ही आता बालक
जो ज्यो समय ज्यो लो लो बड़ा होता जाय और चतुर होता जाय
तो वही लड़का चापको आता है। वैसे ही जो मरत अपनी भक्ति और
भाव में हर रोज आगे बैठते जाते हैं वे ही प्रभु को सो हाते हैं। इस
लिये जैसे वने बैसे ऐसा करना चाहिये कि हर रोज हर महीने
और हर वर्ष अपनी भक्ति में कुछ वृद्धि हो तो भाग्य और अपने चरि
त्र में कुछ सुधार होता जाय।

२४९ जो भक्तिके आगे नहीं बैठते और सदा बल्लुरि वाज पर चलते
हैं न भालक ही जगल पड़े रहते हैं वे बालक ही ठोंगे को सले में रह
जाते हैं। जो हर रोज प्रभु प्रेम में बैठते जाते हैं उनको हृदय में भ
क्ता बैठती जाती है, उनका प्रभु प्रेम बढ़ता जाता है, उनका भाव
बढ़ता जाता है और उनका ध्यान जसता जाता है।

बन्धुओं। जिन भक्तों की भक्ति सदा बढ़ती जाती है उनमें ओ
र जिनकी भक्ति नहीं बढ़ती उनमें क्या फर्क है यह आप जानते

है। इस के बारे में मत कहते हैं कि जो भक्त अपनी भक्ति में आगे नहीं बढ़ते वे जंगल में लगाय हुए पौधों के समान हैं। वे पौधे पानी न मिलने से सुख जाते हैं। ऐसे पौधों को बाहर के पानी भर ही भरे ला रखना पड़ता है। परन्तु जिन भक्तों की भक्ति हर से जड़ सी जाती है वे जमीन में जड़े इस वडे पौधों के समान हैं। उन की जड़ पृथिवी के अंदर के पानी तक पहुँची रहती है। इससे जप तप ध्या न दान आदि जगह गुरु आप से आप उन को मिल जाते हैं वे छीले नहीं पड़ते बल्कि दिन दिन फूल फूलते जाते हैं।

जो भक्त सदा भक्ति में आगे बढ़ते रहते हैं वे धीरे धीरे ईश्वर के निकट पहुँच जाते हैं और ईश्वर की जान पड़वान वाले बन जाते हैं। ईश्वर के साथ बहुत समय तक रहने से फल ग्रह होता है कि जो से सदा एक साथ रहने वाले दो मित्रों में कम जोर भी अप ठे वडे मित्र की चाल सीख जाता है और धीरे धीरे वडे मित्र की कपड़ा पहनने की, बोल चाल और बात बित करने की शक्ति आती उस में आती जाती है। वे से जो भक्त भगवान के साथ अधिक रहते हैं उन में भी ईश्वरी गुण आते जाते हैं और दिन दिन वे गुण खिलते जाते हैं।

२५०

बन्धुओं। भक्ति बढ़ने से से से से बहुत से फायदे होते हैं। परन्तु जो जहाँ के ना हो वडे रहते हैं उन को से सा अनमोल लाभ नहीं मिलता। इस लिये भक्ति तथा ध्यान जान में जहाँ के न हो न पड़े रहकर जहाँ से न वे से हमेशा आगे बढ़ने की कोशिश करना चाहिये। यह कल्याण का सच्चा राजा है।

७५- अनजान में हो जाने वाले पाप के विषय में।

जहाँ बहुत बुराया जरूरत ला सक से शरीर आती हो वहाँ अपने बूढ़े माहुरों को बिठाकर उन से लिखवाया करना और उन की आखों को जो कुछ जान पड़ता है उस की वखान करना पाप है।

अपने कारवाने में जो आदमी का मकान करने आते हो हुन का शीशों तथा मकदूरों की तन्दुली का खाल न रखना और उन के

खराब बुरा पानी में देर तक रहने को लाचार करना तथा उन के काम करने की जरूरत में पकाई न रखना एक दुष्ट का पाप है। अपने घो

खराब हुआ पानी में देर तक रहने को लाचार करना तथा उन के काम करने की जगह में सफाई न रखना एक बुरा पाप है। अपने घोड़े या बैल का कि भरा काम करके थक जाय हों तो भी अपने थोड़े से लाभ के लिये उनको बार-बार गाड़ी में जोतना और उनसे शक्ति से बाहर काम लेना एक बुरा पाप है।

अपने घर में कोई विधवा भौं जाई या भवतु या चाची जान हत हो तो उससे रात-दिन काम करना और उसको कुछ भी आराम न देना तथा यह सोचना एक बुरा पाप है कि यह हमारा काम ही करेंगी तो जायगी कहाँ १ मरजी कर इसे करना ही पड़ेगा हम उसको आराम क्यों दें १ नहीं तब तक चलता है वहाँ तक तो चले।

सा सतत दुका। पत्नी हूँ पर दरना या चलना या ठा पड़े में बहका सास ससूर को सताता बड़ा भारी पाप है।

२५१

बहुत तेज जगह में ज्यादा लड़को को बिठा कर पठना और थोड़े से भाड़े के लोभ से लड़को की नन्दु रूखी बिगाड़ देना तथा उनको अधपसत में अडचल पड़ने देना पाप है।

घ

जानते हो कि घर में स्त्री बीमार रहती है फिर भी उसकी दवा दानु का ख्याल न रखें और जाना तब तक चले उससे काम कराया करें और अन्त को उसकी नन्दु रूखी बिगाड़ डालें परन्तु समझ रहे न चेतें या उसको कुछ आराम न दें तो उसका नाम पाप है।

कितने ही अप्सरों के पास कितने किसान तथा दूसरे गरीब आदमी दौरे दौरे कामों के लिये बार-बार धके खाया करते हैं परन्तु कितने ही अप्सर कारिन्दे तथा दूसरे अमलक भी कभी अपने मन में यह समझते हैं कि इसमें हर्ज क्या है १ अपनी गरज से आते हैं। हे से आदमियों के लिये क्या हम अपना आराम छोड़ दें १ यह सोचकर उनके काम में लापरवाही दिखाते हैं और समझते हैं कि ये हमारा क्या कर सकते हैं १ योजना बुझकर उन्हें भूखा लिये जाते रहने का नाम पाप है।

जो वैद्य या डाक्टर जल्द आराम होने योग्य बीमार को देर से आराम करे, दवा तथा खाने में चाल मटोल किया करे और ऐसे बीमार

र्यों ही अच्छे होते हैं। यह समझकर लापरवाही दिखाकर नवा अपने भरोसे पड़े हुए गिरी से मतलब गोठ करे तो वह प्रकार का पाप है।

२५२ किसी वकील ने किसी का मुकदमा अपने हाथ में लिया हो और फिर कोई वडा मुकदमा मिल जाय या हवा खाने वाला कोई अमीर या मित्र मिल जाय तो उस सके लिये पहले आदमी के मुकदमे में मुहलत लेना और कुछ न कुछ बहाना निकालने जाना तथा मन में यह समझकर कि अब यह मुझे मुकदमा सौंपकर का हाजिर करेगा है उस के मुकदमे में लापरवाही दिखाना पाप है।

रेलगाडी या अगिनवोट में जितनी जगह हो उसमें अधिक के मुसाफिरों को ठिक ठकरना और फिर उनमें धक्का मुक्का होने देना तथा उन्हें असुवीते में डालना और मन में यह समझना कि इस में मेरा क्या दोष है वे लोग अपनी गरज से हेरान होते हैं, यह समझकर उनके आराम पर उचित ध्यान न देना मतलब साधना है और वह पाप है।

जैसे गुरु की इज्जत करते हो उन को आराम न द्याते हो और मन में आशा रखते हो कि गुरुजी की ओर से कुछ बिक्री या लाभ मिलेगा; परन्तु गुरुजी अपने बिलास में पड़े रहें और मन में यह सोचकर कि हमें इन की क्या परवाह है वे से तो धने रहे पड़े हैं; हम उन्ही पर छोड़े हैं वे सो के लिये कौन मगज पची करे वे अपनी गरज से आते हैं और देते हैं इसमें कौन बड़ी बात है वे अपने गुरु को नहीं देंगे तो किस को देंगे वे यह समझकर उन की ओर से लापरवाही दिखाने का नाम पाप है।

बन्धुओं। ऐसे ऐसे अनेक विषयों में अच्छे अच्छे आदमी तथा बड़ी बड़ी कम्पनियां भी कई तरह से अनुचित लाभ उठाती हैं और तिस पर भी वह ही जानती हैं कि हम। यह पाप का काम कर रहे हैं। इस लिये खबरदार रहना कि ऐसी भूल न हो और अनजान में हो जानेवाले पाप से बचना तथा ऐसे पापों की जरूरत अपने स्वेच्छे का ध्यान रखना। यही हमारा सलाह है।

७६- मरने के समय बाल बच्चों की या मा बाप की
फिकर होती है इस से बीमारी में दुःख हो
ता है; उस दुःख से छूटने का उपाय ।

जब अन्त समय की बीमारी आता है तब बहुत आदमियों को
अपने बाल बच्चों की बहुत चिन्ता होती है चाकि सी आदमी के बूढ़े
मा बाप जीते रहते हैं तो उन की बहुत फिकर होती है । इस से वे दुः
खी होते हैं और अन्त को इसी दुःख में मरते हैं । आनन्द से मरना
वे नहीं जानते । वे अपनी अज्ञानता के कारण यह समझते हैं
कि आज तक हमने इन सब को निवाहा है अब हमारे बिना इन
बेचारों की क्या दशा होगी । यह सोच कर वे बहुत दुःखी होते हैं
ऐसी फिकर करने वाले मनुष्यों को समझते ना चाहिये कि हम
रे जी सगे सम्बन्धी हैं उन से थोड़े दिनों का वास्ता है । प्रभु के जीव
हैं और प्रभु अपने जीवों को कभी भूल नहीं जाता । जरा विचार तो की
जिये कि जो प्रभु अनन्त काल से अनन्त ब्रह्मा राट को निवाहरहा
है वह प्रभु क्या आप के बाल बच्चों को या आप के मा बाप को नहीं नि
वाह सकता । जो प्रभु धरती के अन्दर के जीवों को पानी के जीवों को
और आकाश के जीवों को भी निवाहरहा है वह प्रभु क्या मनुष्यों
की मदद नहीं करेगा ? अब इस करेगा । इस लिये मरते समय
से सी झूठी फिकर मत कीजिये वरंच अपने सगे सम्बन्धियों को
ईश्वर के जीव जान कर ईश्वर को सौंप दीजिये और हृदय में पक्का
विश्वास रखिये कि सब का आचार्य भगवान् है । वह ईशानि राधार
जीवों को अपने राज्य में भुखों नहीं रखेगा, जरूर उन का मददगा
रहोगा । यह समझ कर अपने स्त्री व दूधो या मा बाप को प्रभु के
हवाले कर देने से अतलमय की बीमारी में भी शांति रख सकते
हैं । इस लिये अपने सगे सम्बन्धियों का बोझ प्रभु को सौंप देने
की कुत्ती सी खली लिये । तब आप बीमारी में शांति से रह सकेंगे ।
बीमारी शांति से रहने के लिए दूसरी यह बात भी विचारना चा
हिये कि हर एक जीव का अपना प्रारब्ध होता है और हर एक जीव

अपना अपना कर्म ले कर ही इस जगत् में आता है। हमारे स्त्री व स्त्री न
था हमारे भरोसे पड़े इस दुसरे परिजन भी अपना अपना कर्म ले कर
ही आते हैं और उनका कर्म बदल देने की हममें कुछ सम्मर्थ नहीं
है। तब हम क्यों व्यर्थ का अफसोस करके अपना जीवन बिगाडे
१ यह सोच कर जीव को धैर्य में रखना और इन मोके परस में सर्व
विधियों का अफसोस मत करना।

इसके सिवा यह भी विचार करना कि जिन गरीब लड़कों के मा
वाप मर गये हैं या जिन बूढ़े आदमियों के जवान लड़के मर गये हैं
उनको भी परमात्मा भी सज्जानों की ओर से मदद मिला करती है। कि
तनी कार तो ऐसा होता है कि गरीब मावाप की ओर से बालकों को
जितना सुवीना और जितनी शिक्षा मिलती है उससे अधिक सु
वीना और अच्छी शिक्षा अनाथालय में बालों से ही और किसी आ
श्रम में मिलती है। क्योंकि जिनका कोई नहीं है उनका स्वयं भगवा
न है। प्रभु से से ओचक रूप से अनाथों की मदद करना है कि माऊ
म भी नहीं पड़ता। इसलिये मरने समय यात्रा करके गुरुसमय
आसरे पड़े हुए बूढ़े मावाप या छोटे बाल बच्चों की फिकर न करना चा
हिये। ऐसी फिकर करने पर से समय से से बीमारों से कुछ हो
भी नहीं सकता। इसलिये उस फिकर का जो झपटु पर सो पड़ेना
और आप उसकी दृष्टा के अधीन हो जाना सबसे उत्तम बात है औ
र यही हरिजनो का स आधर्म है। ऐसी ऐसी बातों को पहले से
समझ लेना चाहिये तथा अन्त काल की बीमारी में से से हरिजनो
के सत संग मे रहना चाहिये जो इस बाद को प्राद दि लावे। ऐ
सा करने पर बीमारी के कल से बच सकते हैं। जो स जो स न हो
और जगत के इन्तरे मो हसे धू ट गये हो उन से शा न्ति पाने की ऐसी
युक्ति सीख ली जिन और उसे हृदय में बिगल देने की को शिक्षा
की जिये। यही हमारा सलाह है।

बन्धुओ। हमारे सगे जितने हमारे नजदीकी हैं उस से कहीं
अधिक प्रभु के नजदीकी हैं। हमने तो खींचता न कर अपना
सम्बन्ध जो जहाँ, हमारा जो कुछ सम्बन्ध है वह स आसम्बन्ध

२०७
नहीं है। हमारा प्राण का सम्बन्ध सिर्फ इस नवका सम्बन्ध है औ
र उस में भी कितना ही सम्बन्ध तो हमने जबरदस्ती रचा है।
कौन

नहीं है। हमारा या हां का सम्बन्ध सिर्फ इस प्रकार का सम्बन्ध है और
 इसमें भी किताब ही सम्बन्ध तो हमने जबरदस्ती रचा है।
 हिता तो से जो सम्बन्ध है वह अनकाल के लिये नहीं है। कौन
 जानता है कि इस जन्म के हमारे मा. बाप पिछले जन्म में क्या थे।
 और इस जन्म के हमारे लड़के बाले पिछले जन्म में क्या थे। इसी
 तरह आगे के जन्म में हमारे मा. बाप. न जाने क्या होंगे और हमारे
 लव. धे. भी न जाने क्या होंगे। यह सब सम्बन्ध. कर्म के अनुसार मनु-
 श्य के मरने पर बदला करता है। ऐसे बदलाने वाले सम्बन्ध की कि-
 ममत कुछ बहुत नहीं होती। इससे यह घड़ी भर का और शूरा सम-
 न्ध. कहलाता है। परन्तु प्रभु का जीव से जो सम्बन्ध है वह अन-
 काल का है और अनकाल कर देने योग्य है। इस सम्बन्ध में कि-
 सी तरह का केवल बदल नहीं होता; इस लिये यही सच्चा सम्बन्ध है
 १. अपने बदलने इस सम्बन्ध पर हम जितना प्रेम रखते हैं उससे
 ही अधिक प्रेम परम रूपालु परमात्मा अपने सच्चे सम्बन्ध वाले
 जीवों पर रखता है। इससे हमारे लगे सम्बन्धियों के लिये प्र-
 भु को हमसे ज्यादा ख्याल है। इस लिये बीमारी जैसे समय में स-
 म्बन्धियों की फिकर में मत कोहरा मत करना। एक तो रोग के कुछ
 से मत व्यग्र रहता है उसमें और फिकर करने से उल्टे बीमारी बढ़
 जाती है। ऐसा न होने देने के लिये ऐसे समय में सेवते बैसे जा-
 न बुझ कर फिकर छोड़ देना चाहिये। फिकर छोड़ने का सबसे अ-
 धा उपाय यह है कि परम रूपालु विश्वम्भर के विश्वास पर और
 इस के अर्थ से अपने लगे सम्बन्धियों की लगाम छोड़ दे। विश्व-
 म्भर माने क्या यह आप जानते हैं? विश्व माने वह जिसके अन्द-
 र ऐसी अनेक पृथिवियाँ हैं। ऐसे अनेक विश्वों का जो अलग-अलग
 लगे पोषण किया करता है वह विश्वम्भर कहलाता है। यह
 विश्वम्भर ऐसा महान है कि उसके सकल सकल से से अनेक प्रजा-
 राट हैं। इसा समय प्रभु जो दौरे दौरे देगी वो का भी पूरा पूरा ख्याल
 रखता है वह क्या उन मनुष्यों को भूल जायगा? नहीं ऐसा
 कभी नहीं होते का। प्रभु किसी को नहीं बिछाता। किसी आदमी
 के लिये हम जितना ख्याल रखते हैं उससे कहीं अधिक ख्याल

२५६

हाव हर खना है। इसलिये हमें अपने समे सम्वन्धियों की फिर
उसे सोंज देना चाहिये और आप शांति से रहना चाहिये। शांति से
रहने से बीमारी जल्द छुट्जाती है। इसलिये बीमारी में शांति से
रहना सीखिये।

७- संग से लाभ।

२५)

सं

बन्धुओ। मुख्य जानिका स्वभाव ऐसा है कि उसको मित्र की जरूरत
पडती है। प्रभु ने मुख्य को ऐसा बनाया है कि जब उसके साथ
उसके ऐसा कोई दूसरा आदमी होता है तभी उसे स्वाद मिलता है
। जगत की ऐसी रचना होने का कारण किसी आदमी को अकेले
रहना नहीं आता। राजमहल में रहने वाले राजको किसी दूसरे
आदमी के संग की जरूरत पडती है। इससे मालुम होता है कि आ
दमि विना आदमी के संग में नहीं रह सकता। हर एक आदमी को
किसी न किसी आदमी की संग चाहिए। मुख्य का स्वभाव ही
ऐसा है कि वह विना किसी की संगत के अकेले कभी रह नहीं
सकता।

जैसे मुख्य संग विना नहीं रह सकता वैसे पशु पक्षी आदी
दि जानवर भी विना संग के नहीं रह सकते। जैसे कुत्ता, गाय,
घोड़े, ऊँट, हाथी, बछली, पकरो, मुर्ग, पक्षु लें और कने भी आप
पनी अपनी जाति में मिल कर रहते दिखाई देते हैं और उ
नमें अपने समान किसी खास से विशेष प्रकार की मित्रता दिखा
ई देती है। मधुमक्खी तथा चींटी जैसे छोटे जीव भी अपनी जा
ति के जीवों के साथ मिल कर रहते दिखाई देते हैं वे भी विना
संग के अकेले रहते नहीं जान पडते इससे सिना, बाघ, भालु, नी
ला, शेर आदि, **७** खूंखार जानवर तथा विशाल आकाश में उड़ने
वाले बाज, गरुड़, आदि पक्षी भी अपनी अपनी जाति वालों की
संगत में रहते हैं। जगत की रचना ही ऐसी जान पडती है कि

प्राणियों से विलास संग के रहान ही जाता। इसलिये मनुष्यों के संग की जरूरत है।

इस जरूरत के लिये बड़े बड़े राजा बड़े बड़े दरबार लगाते हैं, बारिचों का जत्था होता है, पण्डितों की सभा होती है, पण्डितों का सिपाही को दुकड़ी होती है, साधुओं की जमात होती है, ब्राह्मणों की विरादरी होती है, गवैयों की मशाली होती है, खे लकूड के लिये अखाड़े, जिमखाने होते हैं और मौजशौक करने २५८ तथा का मका जसे उबे हुये मनुष्यों के विश्राम के लिये तरह तरह तरह के क्लव होते हैं। वैसे ही हरिजनो के लिये सत्संग की मशाली होती है।

अच्छी संगत होने पर बहुत तेजी से आगे बढ़ सकता है। इस के लिये भी संग की जरूरत है जैसे -

एक ही को मले माल एक ही लकड़ी को मुलगावे तो वह जल्द नहीं मुलगाती परन्तु अमीरी में ज्यादा को मले आबू लहे में ज्यादा लकड़ीयां हो तो जल्द मुलग जाती है। वैसे ही अकेले आदमी से बहुत अच्छी तरह मजदूर मजदूर नहीं बनता परन्तु जब उसे बहुत आदमियों का संग मिल जाता है तब वह बहुत अच्छी तरह भक्ति मार्ग में आगे बढ़ता है।

जब अकेले यात्रा करता पड़े तो डकास लगता है, रास्ता बहुत लम्बा हो जाता है, परन्तु अच्छा साथ मिल जाने पर बड़ा आनन्द आता है, और रास्ता जल्द तय हो जाता है। इसी तरह जब किसी अच्छे आदमी का संग मिल जाता है तब वह भक्त मजदूर करने में बड़ा आनन्द मिलता है। परन्तु जब संग नहीं होता तब निश्चय ही रहस्यमय, मन मो जी काम होता है। ऐसे मन मो जी का मजे कुछ फल नहीं होता।

जब हम अपने घर में वा दूसरी जगह अकेले जीमते बैठते हैं तब डकता मजान ही आता, लेकिन जब अपने हित मित्रों के

साथ भोजन में जीमने जाते हैं तब वही विशेष आनन्द होता है और उस समय बड़े आनन्द से जीमन होता है। वे से ही घाद रखना कि अकेले आदमी से ही कहीं कभी भजन नहीं होता; परन्तु जब आपने विचार के हरिजनो का संग मिल जाता है तब बहुत अच्छी तरह से भजन होता है।

गाने व जाने में भी अकेले आदमी को आनन्द नहीं आता परन्तु जब उस के साथ दूसरे गवै से तथा सुनने वाले होते हैं तभी २५५ आनन्द आता है। वे से ही घाद रखना कि अकेले आदमी से ही कहीं कभी भक्ति नहीं होती; जब अच्छा संग मिल जाता है तभी प्रेम पूर्वक भक्ति होती है।

कोई विद्यार्थी अकेले पढ़ता हो तो वह बहुत प्रेम और शीघ्रता से नहीं सीख सकता; परन्तु जब वह स्कूल में पढ़ने जाता है और वहाँ से विद्यार्थी को के साथ बैठ कर पढ़ता है तब दूसरे को पढ़ते देख कर तथा दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश होते देख कर उस का भी पढ़ने का हौसला बढ़ता है इस से वह भी अधिक जीलगा कर पढ़ता है। वे से ही जो हरिजन सत्संग की मंडली में जाते हैं उनमें भी एक दूसरे को देख कर ईश्वर प्रेम जागता रहता है।

इस प्रकार हर विषय में संग का असर होता है और अच्छा संग होने पर बहुत तेजी से काम किया जा सकता है। इस लिये हरिजनो को; वैष्णवो को; तथा भक्तो को अकेले न रहना चाहिये वरंच अधिक हरिजनो को एक दुहे कर भगवत्सत्संग आनन्द होना चाहिये। इस तरह बहुत से हरिजनो के साथ मिल कर अपने अन्दर तथा दूसरे के अन्दर प्रभु प्रेम जागने को प्रसंग कर रहे हैं सत्संग की ऐसी मंडली बनाने से बड़ा लाभ होता है। जैसे -

किसी काम के लिये सरकार के पास दरवाजा खोलने जाता हो तो

एक आदमी को ल ही होते से उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता परन्तु से कुछ हजारों आदमियों को स ही से अरजी जाय

ऐक आदमी की सही होने से उस पर विशेष ध्यान ही दिया जा ना; परन्तु से कडे हजारे आदमियों की सही से अरजी जाय तो उस पर सरकार को विशेष ध्यान देना पड़ता है और बहुत विचार करके उस का जवाब देना पड़ता है। वैसे ही अगर अकेले प्रभु की प्रार्थना करे तो उस का असर बहुत थोड़ा होता है परन्तु से कडे हरिजन साथ मिल कर भगवान की प्रार्थना करे तो उस का असर बहुत बड़ा होता है और वह प्रार्थना जल्द सुनी जाती है।

सत्संग मंडली की प्रार्थना प्रभु जल्द सुनता है, इतना ही नहीं बल्कि हमारे शास्त्रों में कहा है कि भगवान का वास भगवान के मण्डिर में होता है; भगवान का वास सत्संग के हृदय में होता है और भगवान का वास हरिजन समा हो कर होता है भगवान की कथा वार्ता करते और उस का गुण गाते हैं उस सत्संग में भी होता है। इस तरह सत्संग की मंडली में परम रूपालु परमात्मा का वास होता है। इस लिये जो सेवते वैसे हमें अच्छे सत्संग का लाभ लेना चाहिए ऐसे लाभ लेना बहुत बड़ा मुल है। ऐसी भूल न होने पावे इस का खयाल रखना।

७८-सत्संग से लाभ (२)

सत्संग का लाभ समझाने के लिये एक माहात्मा कहते थे कि जिस सहर के पास मीठे जल की बहुत बड़ी और सुन्दर दीवहती है उस सहर के आदमी बड़ी सफाई से रहने हैं और उन का शरीर तथा उन का कपड़ा बहुत स्वच्छ दिखाई देता है। वैसे ही जिस स्थल में हरिजनों की बड़ी मंडली जमा होती है और जहाँ बहुत से स्त्री पुरुष तथा बड़े छोटे मिल कर अपना पाप त्याग देने की कोशिश करते हैं तथा भगवान् के सका आनन्द लेते हैं वहाँ दूसरे स्थानों से अधिक पवित्रता, अधिक उन्नतता और अधिक आनन्द मालूम होता है। इस लिये जिनसे बात सके उन मनुष्यों को सत्संग में रहने को विशेष जरूरत है।

जहां सदा नियम पूर्व क सत्संग हुआ करता है उस स्थान की तथा इस
सत्संग आस पास की हवा ही बदल जाती है और वहां का वायु मराडल
बड़ी शान्ति वाला बन जाता है। जो आदमी कहा जाता है उसको प्र
क प्रकृति का प्रकृति का आनंद हुआ करता है। जिसको ऐसा आ
नंद हो उसको भी कुछ न कुछ थोड़ा बहुत आनंद लाता हुआ आकर
ता है। इसलिये जे सेवने वैसे से सीप विन सत्संग मराडल को ला
लाभ लेना चाहिये।

सत्संग मराडली में आने से क्या लाभ होता है। यह आप जानते हैं
१ इसके लिये सत्संग के अनुभवों हरिजन कहते हैं कि जो अच्छी
सत्संग मराडलियों हैं उनमें हमसे अधिक कष्टास्त्र के अपासी न
था अधिक प्रेम रस में डूबे हुए हरिजन होते हैं। उनके सत्संग से
हमें बहुत लाभ होता है। दूसरे जो भक्त ईश्वर की सेवा तथा ठ
सकात्म राग करने में ही अपनी जिन्दगी भाव डा भोग विनायर
हते हैं उनके सत्संग से हम पर नाराज मत होता है। इससे भी बहुत
तबड़ा लाभ होता जाता है। इससे सिवा भक्ति मार्ग की अनेक प्रकार
की शंकाओं का मन मुतादिक समाधान हो जाता है। अरे हो घर
में बैठे बैठे मन ही मन जो तर्क विवर्तन करता है उसे वैसे सा स
माधान नहीं हो सकता। इसलिये सत्संग में जाने की हर एक ह
रिजन को खास जरूरत है।

सत्संग कभी मोक्ष के सुरों का वर्णन करके जीवा मा को हं
थरके निकट ले जाता है, कभी तरु के दुःखों का वर्णन करके पा
प से दूर रहना सिखाता है, कभी सत्संग यह समझाता है कि य
ह गगन क्षण भंगुर है और इसमें जो विषय के सुर हैं वे सब स्व
प्रसमान हैं। इसलिये ऐसे मोक्ष में न पड़े रहना चाहिए। यों कह
कर विरग सिखाता है और कभी कभी ईश्वर की महिमा तथा इ
सके अजर अमर गुणों का वर्णन करके हममें प्रभु प्रेम का नारा गत
गाता है। ये सब बातें सत्संग में जिस खूब सूरती से होती हैं उस
खूब सूरती से वैसे ही असर करने वाली होती हैं और कहें ही हो

सकती। ऐसा अनमोल लाभ लेने के लिये हमें नियम पूर्व क स
त्संग में जाना चाहिए।

हमारे भक्त बराग के भक्त कितने ही पाप ईश्वर के लगे हो

सकती। ऐसा अनमोल लाभ लेने के लिये हमें निश्चय पूर्व कस
संग में जाना था हिम्मे।

हमारे अन्तःकरण के अन्दर कितने ही पाप हैं कि स्त्र के हो
ते हैं जिन की हमें खबर ही होती। परन्तु सत्संग सराउनी में अनु
भवी भक्त इस कि स्त्र के पापों का वर्णन करते हैं इससे हमें अ
पने दोषों का पता लग जाता है। वहां उन दोषों को छोड़ने का
उपाय भी बताया जाता है इससे इस कि स्त्र के उपायों को भी
छोड़ सकने हैं। दूसरे बहुत आदमियों का स्वभाव ऐसा होता है
कि वे हमें शाख खराब खराब बिना कि स्त्र करते हैं और बिना का
रण है राब हुआ करते हैं तथा व्यर्थ को दुखी हुआ करते हैं। इस
म
कहा जोर जब के आदमियों को, ऐसे मोहना दिनों को और ऐसे
अज्ञानियों को भी अपना अफसोस भित्ताने का उपाय सत्संग
से मिल जाता है। सत्संग में बार बार बरहतरह से वही जो वही
उप
वाते होती हैं। सत्संग का उद्देश्य ही यह होता है कि जे से वने व
से पाप को त्यागना और प्रभु को अन्तःकरण में पहरना। इन
दोनों कामों के लिये सत्संग में अनेक प्रकार के उपाय बताये जा
ते हैं। उनमें जो उपाय जिस आदमी को जं बनाना है उसे वह
पकड़ लेता है। इससे कितने को पुरत ही बहुत लाभ हो जा
ता है और कितने को आगे जा कर लाभ होता है। इस प्रकार
सत्संग से लाभ ही हुआ करता है। इस लिये जिन भाई बहनों
से वने उनको जरूर सत्संग का लाभ लेना था हिम्मे।

इस दुनिया में अनेक प्रकार के दुःख हैं। इस के सिवाय इ
त आदमी जिन का दुःख होता है उससे अधिक बढा देते हैं।
इस कारण सब आदमी को कि सी न कि सी गं रह को क
मि
ठिनाई होती है जैसे - कि सी को धन को दुःख होता है; कि सी
को लड़को का दुःख होता है; कि सी को बिमारी का दुःख होता है;
कि सी को रोग का दुःख होता है; कि सी को स्त्री का दुः
ख होता है; कि सी को नौकर का दुःख होता है; कि सी को मालि

कभी दुःख होता है। किसी को अफसोस का दुःख होता है किसी को विरह दर्श का दुःख होता है, किसी को बडप्पन का दुःख होता है, किसी को अभीमान का दुःख होता है, किसी को अज्ञानता का दुःख होता है, किसी को बहम का दुःख होता है, किसी को धर्म की शंका का दुःख होता है, किसी को शिष्य का दुःख होता है, किसी को गुरु का दुःख होता है, किसी को पढने का दुःख होता है, और किसी को दुर्घटना का दुःख होता है। मे सन दुःख जन्म सत्संग में भगवान के दुःख का गुण गाया जाता है नवम श्री भाग्य का आनन्द जन्मता है तब श्री देव विस्तरा ने है। इस के सिव सत्संग मराठली में दुखियों को दार स मिलता है हारे हुओं को हिल मिलती है, भूले हुओं को रासा मिलता है, भूले हुओं को विशा म मिलता है, आलसियों को उत्साह मिलता है, अज्ञानियों को ज्ञान मिलता है और पापियों का पाप दो डने का उपाय मिलता है तथा गरिबों को दान मिलता है। इस से सत्संग के समये बहुत आदमी अनेक प्रकार के दुःख भुल जाते हैं। सत्संग में ऐसी रूबी है। इस लिये हर एक आदमी को जे से बने वैसे सत्संग का लाभ लेने की कोशिस करना चाहिये। सत्संग का लाभ लेने के लिये मनसूना बाधना चाहिये और इसके लिये अपने अनुकूल नियम रखना चाहिये। उपर उपर से या मन मो गी ठ गहर जो सत्संग होता है उसमें कुछ बहुत दम नहीं होता। जब नियम पूर्वक सत्संग होता है तब उसमें विशिष्ट आनन्द आता है और तब उसकी असली रूबी समझ में आती है। इस लिये हर एक हरिजन को नियम पूर्वक सत्संग में लगे रहना चाहिये।

७५ - सत्संग से लाभ। (३)

इसके विषय में और इसके भक्तों के विषय में सत्संग में जैसी बर्चा होती है वैसे ही और कहीं नहीं होती। न जो नही अर्थात् सत्संग होता है वहां भगवान के स्वरूप का भक्त के लक्ष

रूप पर विश्वास का श्रद्धा लागा जाता है। भगवान की महिमा और उनके लिये प्रार्थना से समझा जाता है

गी

२६५

रण पर विद्या प्रकाश डाला जाता है। भगवान् की महिमा और
भक्तों की योग्यता सत्संग में जिस स्वरूप से समझा दी जाती है
उस स्वरूप से ओर कहीं नहीं। दूसरे लोग पहले के महान् भक्तों की
बड़े-बड़े चमत्कार की बातें किये करते हैं, परन्तु सत्संग में प्रहस
मझाया जाता है कि ये सब चमत्कार किस नियम से हुए। जो कोई
ईश्वर चमत्कार कहीं कहीं हाल में हुआ हो तो है - उन सब की
बर्णना सत्संग में नहीं होती है। इससे भक्तों की बड़ाई सम्बन्धी,
भक्तों के कर्तव्य सम्बन्धी, भक्तों की योग्यता सम्बन्धी, भक्तों की परि
यता सम्बन्धी, भक्तों की सहनशीलता सम्बन्धी और भक्तों पर पर
सती हुई ईश्वर की कृपा सम्बन्धी समाधान बहुत स्पष्ट हो जाता
है। इसके सिवा प्रहसी समझ में आता है कि वास्तव में भक्त कैसे
होते हैं और भीतर के भक्त कैसे होते हैं, सकाग्र भक्त कैसे होते हैं
और केवल ध्यान द्वार में भक्त कहलाने वाले कैसे होते हैं तथा हृ
दय से गले हुए भक्त कैसे होते हैं और भक्ति की नयी बातें बतलाने
भक्त कैसे होते हैं। इन सब बातों का यत्न सत्संग में मिलता है। इस
प्रकार भक्तों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार समाधान सत्संग में हो जा
ता है और सर्व शक्तिमान् महान् ईश्वर के स्वरूप के विषय में जीव
हुत सी जानने योग्य बातें सत्संग से मालूम होती हैं और यह सब जान
ने की विशेष जरूरत है। भिन्न भिन्न मनुष्य ईश्वर के स्वरूप के स
म्बन्ध में जुदी जुदी कल्पना किये करते हैं, भिन्न भिन्न समुदाय वाले
ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में, भक्तों के साथी देखने के समान, जुदी
जुदी बातें कहते हैं। यह सब सुनकर नाराज दूसरे से विद्वज्जनों
जानकर बहुत रोते हैं कि जो सुहृद जन्म नहीं मने हैं रात-डुआ करते हैं औ
र किसी साधु ब्राह्मण से पूछते हैं तो भी सन्तोषदायक समाधा
न नहीं होता। परन्तु ऐसे आदमी जब सत्संग में जाते हैं तब ईश्वर स
म्बन्धी बहुत सी जानने योग्य बातें जान लेते हैं। इससे उनके मन का

समाधान हो जाता है, ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में उनके मन में जो झुंठी कल्पना पैदा आ करती है वे निकल जाती हैं और ईश्वर का असली स्वरूप समझ में आता है। इससे विश्वास का बल बढ़ता है, धर्म का बल बढ़ता है, भविष्य मोक्ष की आशा का बल बढ़ता है और भक्तों के चरित्र ठीक हो जाते हैं, रिश्ता नाने से अपना लक्षण सूधारने का बल बढ़ता है। इससे जिन्दगी सुधरती जाती है और आगे जाकर सच्चे भक्त हो सकते हैं। याद रहे कि यह सब सत्संग से होता है। इसलिये सत्संग करना बहुत बड़ी बात है, बहुत जरूरी बात है और बड़ी खूबी की बात है। इसलिये भाईयो! सत्संग में पड़े रहना। सत्संग को छोड़ मत देना। यह हमारा सलाह है।

सत्संग से किसी आदमी को भीतर के पाप के सम्बन्ध में समाधान हो जाता है, किसी आदमी को स्वर्ग नरक सम्बन्धी खुलासा हो जाता है, किसी आदमी को सोंसार की झूठाई के सम्बन्ध में जानने योग्य बातें मालूम हो जाती हैं, किसी आदमी को भोली भेदाव का माहात्म्य मालूम हो जाता है, जीवन का उद्देश्य किसी आदमी की समझ में आ जाता है, किसी आदमी की समझ में यह आ जाता है कि माया का स्वरूप कैसा है, किसी आदमी की अपने हृदय के विकारों को दूर करने की कुंजियाँ मिल जाती हैं कि किसी आदमी को दूसरों का अपराध क्षमा करना आ जाता है, किसी आदमी को गम खाना आ जाता है, किसी आदमी को नष्ट नष्ट भजन कीर्तन आ जाना है, कोई आदमी किसी किसी प्रकार के उपदेशों की निष्पत्ति ले लेता है, कोई आदमी अपने धन का अच्छा उपयोग करना सीख जाता है, कोई आदमी अपनी स्थिति में संतोष रखना सीख जाता है, कोई आदमी अज्ञानी मनुष्यों को समझाने कि युक्तियों सीख लेता है, कोई आदमी प्रभुप्रेम को पकड़ लेता है, कोई आदमी ढीला हो तो उत्साही बन जाता है, कोई आदमी वहमी हो तो उसका वहम दूर हो जाता है, कोई

ती. ई. आदमी नास्तिक हो तो उसकी नास्तिकता जाती रहती है, कोई आदमी मोत से बहुत डरता हो तो उसका मोत भाँट डर

ती. ई. आदमी नास्तिक हो तो उसकी नास्तिक ~~ही~~ ना जानी रहती है; कोई आदमी मोत से बहुत डरता हो तो उसका मोत का डर भाग जाता है; कोई आदमी बाहरी भक्ति में रह गया हो तो उसे भीतर की भक्ति करना आ जाता है; कोई आदमी झूठी सेवा में पड़ा हो तो उसे सच्ची सेवा करना आ जाता है; कोई आदमी अलसी हो तो वह दुष्टों को बन जाता है; कोई छोटे छोटे प्रपंचों में पड़ा रहता हो तो वह इसकी आदत छोड़कर धर्म सम्बन्धी विषयों में अपने मन को लगाने लगता है; कोई आदमी मगाना भोग विलास करता हो तो अकृश में आ जाता है तथा ईन्द्रिय नियंत्रण करने लगता है और कोई आदमी ईश्वर सम्बन्धी कुछ भी न जानता हो तो वह भी सत्संग से ईश्वर का महान भक्त बन जाता है। इस प्रकार सत्संग से किसी आदमी को इस किस्म का समाधान हो जाता है; किसी आदमी को समझ में कोई बात आ जाती है; किसी आदमी को किसी विषय में ठारस मिल जाता है; किसी आदमी को भक्ति का आनन्द मिल जाता है; किसी आदमी को हृदय की चिन्ता मिल जाती है और किसी आदमी को हृदय की शांति मिल जाती है। इस तरह सत्संग से हर एक हरिजन को कुछ न कुछ मिला करता है। इसलिये सत्संग करना बहुत अच्छी बात है। सत्संग जिन्दगी सुधारने की चाबी है। सत्संग में लगे रहिये। सत्संग में लगे रहिये।

८०- सत्संग से लाभ (४)

इय हम इस जगत में किस लिये जन्मे हैं, जीवन का उद्देश्य क्या है और आज क्या है के जमाने में हमें क्या क्या काम करने चाहिये इन सब विषयों का खुलासा सत्संग में हो जाता है। इसके सिवा इस बात का निश्चय भी सत्संग में होता है कि मुझे मुझे स्वभाव के अनुसार से कैसा वर्तविक करना और उससे कैसे निबाह लेना

भा

ना चाहिये। हम जानते हैं कि हमसे काम पड़े वाला आदमि
 २६८ यो में कोई बड़ा को धी होता है, कोई बड़ा तो भी होता है, को
 ई बड़ा अनदेखा होता है, कोई बड़ा अभिमानी होता है, को
 ई बड़ा विषयी होता है, कोई बड़ा वानूनी होता है, कोई बड़ा
 निन्दक होता है, कोई बड़ा झगड़ालू होता है, कोई बड़ा हठीला
 होता है, कोई बड़ा झगड़ामोल लेने वाला होता है, कोई दूसरे
 को लड़ाने वाला होता है, कोई बड़ा नकम बोलता है, कोई बड़ा धु
 र्ता होता है, कोई बड़ा मीसन होता है, कोई बड़ा बट बोलता होता
 है, कोई आदमी बड़ा मसरब होता है, कोई आदमी किसी कि
 शो सी बात का बड़ा सो कीव होता है, कोई बड़ा उडाउ होता है, कोई ब
 डा वह मी होता है, कोई आदमी धर्म के नाम पर उकठता है, को
 ई आदमी बड़ा सुखी मिजाज होता है, कोई आदमी खुशाम
 दी होता है, कोई आदमी दूसरे पर दुकूनत चलाने की टेववा
 ला होता है, कोई दुर्पोक होता है, कोई मारपीट करने वाला,
 जोशीला होता है और कोई अफीम की ब्राशर बीजा गंजे डी छो
 ता है। इन सब मनुष्यों के साथ निबाह ले जाने का ठहस संग
 से मालूम होता है। ऐसे आदमियों से काम पड़े पर कलहन
 करने और सब से चला ले जाने तथा ऐसे सो की भी प्रसन्न रख
 ने की बात समझ लेने की जरूरत है। ये सब विषय घर में बैठे
 रहने से नहीं आते बल्कि बाहर बाहर सत्संग में जाने से इन सब
 का समाधान हो सकता है। इसलिये सदा सत्संग में जाने
 की आदत दालना चाहिये।

मन का स्वभाव ऐसा है कि वह छोटे छोटे विचारों में भटक कर
 ता है। इस तरह भटकते हुए अपने मन को कैसे रोके तथा कि
 स किस्म के विचारों में लग जावे यह सत्संग में सीख सकता है।
 मन को भटकते से रोके के बहुत से उपाय हैं। जैसे - जप

२६९ रने से मन रुक सकता है, ध्यान धरने से मन रुक सकता है, किसी
 पदार्थ की याद रखने से मन रुकने से रुक सकता है।

२६६ रने से मन रुक सकता है; ध्यान धरने से मन रुक सकता है; किसी प्रकार की भावना ओ में लग जाने से मन भर जाने से रुक सकता है; ज्ञान केवल से मन रुक सकता है; योग विद्या की प्रारणायाम आदि क्रियाओं से मन वसं मे रह सकता है; परमार्थ के काम में लगे रहने से मन का बूझ रह सकता है; वैराग्य के विचार से मन रुक सकता है और प्रभु के साथ सत्काकार हो जाने तथा भगवत् ईश्वर के अनुसार चलने से मन वश में रह सकता है। इस प्रकार मन को रोकने के छह ही उपाय हैं। जिन जिन उपायों को भगवत् को मिल जाते हैं; इस से वे अपने मन को वश में रखना सीख जाते हैं। जिन का मन वसं में आ जाता है उन्हे भक्ति में आगे बैठने बहुत देर ही सूझती। वे बड़ी आसानी से प्रभु के रास्ते में आगे बैठ सकते हैं। जो भक्त भगवान् के रास्ते में आगे बैठ जाते हैं उन के सुख का वर्णन नहीं हो सकता। यह सब सत्संग में होना है। इस लिये सत्संग बहुत बड़ी बात है और यह हर ईश्वर से हाथ लेना चाहिये। जिस से बने वह सत्संग बालाभले ने से न बुद्धे। यह हमारी सलाह है।

या वन्द्यो। सत्संग बालाभले कितना बताने इस विषय में जितना ही अधिक विचार करते हैं उतना ही सत्संग का नशा लाभ मालुम होता जाता है। जैसे - सत्संग में रहना कभी रखा सकर सीधे में आती है; कि जगत के बहुत जीवों में रुक ही ईश्वर है; अन्तर्यामी रूप से तथा बापक रूप से परम रूप पालुप रमात्मा हर प्राणी के अन्दर है। इस लिये किसी जीव को दुःख न देना चाहिये। इसका जैसा रबूला सत्संग में होना है वैसा और कहीं नहीं। इस के सिवा बहुत आदमियों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे दूसरे की पंचायत कि या करते हैं। पर लुप्त सत्संग में जा

२१० ने से समझ में आ सकता है कि हम दूसरों का दोष देखने क्यों जा-
 यें १ जिस बात से हमारा कुछ भी सरो कार नहीं है उस बात में हम
 क्यों सिर खपावें १ जगत में देखने योग्य, जानने योग्य समझ
 ने योग्य और अनुभव करने योग्य दूसरे विषय क्या कम हैं कि
 दूसरों की पंचायत में पड़े रहे १ ऐसा असरदार खूलासा होगा
 ने से हम किस्म का वो झभी हल्का हो जाता है। इसके सिवा स-
 त्संग से एक और लाभ होता है। ईश्वर रूप से बहुत आदमि
 यो को धन मिला है, बहुत आदमियो को शरीर का बल मिला
 है, बहुत आदमियो को राज्याधिकार मिला है, बहुत आदमि
 यो में खास खास गुण होते हैं, बहुत आदमियो में कुछ कुछ
 धर्मकार दिखाने की शक्ति होती है और बहुत आदमियो में
 बुद्धि का बहुत बल होता है। परन्तु अपने में जिस प्रकार की श-
 क्ति हैं उससे आप लाभ लेना तथा उसका लाभ दूसरे भाँव वह
 को को देना बहुत आदमियो को नहीं आता। इससे वे अपने सु-
 ख का अपने सुखीने का तथा अपनी शक्तिका जैसा चाहिये बेसा
 लाभ नहीं ले सकते। सत्संग में जाने से उनकी समझ में आ जाता
 है कि सब ईश्वर रूप से मिली हुई शक्तियों को ले लायक न
 ही है, इनसे अपना जीवन सार्थक करने का चाहिए। यह स-
 मझ आने के बाद उन सब शक्तियों को लो गो के कल्याण के का-
 म में लगाने की कुंजियां भी सत्संग में मिल जाती हैं। इससे उ-
 न को बहुत फायदा होता है। इसलिये सब भाँव करने को ठीक
 दर्जे के सत्संग में शामिल होना चाहिये। क्योंकि सत्संग स्वर्ग
 की सी छी है और सत्संग प्रभु को प्रिय है।

श्रीमारी और मृत्यु मुख्य जाति के लिये दो बहुत बड़ी
 आफतें हैं। कोई आदमी ईश्वर से बच नहीं सकता। परन्तु बहुत
 आदमी नहीं समझते कि उस समय के सेधीर न धरें और कि
 मरी तिले काम लें। इससे दोनों विषयों में वे बहुत दुखी हो-
 ते हैं। सत्संग में जाने पर वहाँ की बातचीत से सीख सकते हैं

२११ कि मृत्यु का अफसोस न करना चाहिये। क्योंकि मृत्यु कुदरती
 है यह किसी के रोके नहीं रुक सकती मरि के समय तक

२११ कि मृत्यु का अफसोस न करना चाहिये । क्योंकि मृत्यु कुदरती है, यह किसी के रोके नहीं रुक सकती, मृष्टि के उत्पन्न कर्ता प्रह्लादभा देवता और स्वर्ग के राजा हनु को भी काल के अधीन होना पड़ता है । तब काल के गाल में पड़े हुए हम सब मनुष्य किस हिसाब में हैं । भगवान के अवतारों को भी अपने असली स्वरूप में समा जाना पड़ता है, अमर गिने जाये ना ले स्वर्ग के देवताओं को भी गिरना पड़ता है और हजारों वर्ष की लम्बी आयु वाले ऋषि मुनियों को भी मरना पड़ता है । तब हमारी क्या विस्मय है ? इस लिये मौत के समय धीर खरना चाहिये । दूसरे, आत्मा अमर है, वह हमर नीन ही, इस लिये मौत का अफसोस न करना चाहिये । ऐसी ऐसी बातें सत्संग में असरदार हो तिले समझा दी जाती हैं । इससे ऐसे समझदार सधराना था मन बूती रखना आता है । इसी तरह सत्संग में बीमारी के विषय में भी बहुत समाधान बहुत हरिजन किया करते हैं और यह विश्वास दिला देते हैं कि कितनी ही बार बीमारी से भी कितने ही आदमी पाप से बच सकते हैं, बीमारी के कारण भी बहुत आदमियों की देह का अभिमान दूर हो जाता है, बीमारी के कारण भी बहुत आदमी अच्छी रुचि वाले बन जाते हैं और बीमारी के कारण भी बहुत आदमी धर्म के मार्ग में आ जाते हैं । इस तरह बीमारी से भी बहुत फायदा हो जाते हैं । सब बातें घर में बैठे रहने से ही होतीं, सदा सत्संग में जाते रहने से ही होती हैं । सब बातों का मन मुआफिक समाधान होता है । इससे हृदय में शक्ति ठहरती है, प्रभु प्रसन्न होता है और जिन्दगी सुखी जाती है । इस लिये सत्संग की बालि हारी है और उसका जितना खान करें सब भोडा है ।

२१२ सच्चे सत्संग में किसी का समय व्यर्थ नहीं जाता । इस के लिये महात्मा लोग कहते हैं कि ईश्वर के पास पड़ा हुआ कोई भक्त

कभी खाली हाथ पी दे न हीं लो दता । सब को उन की योग्यता और
भावना के अनुसार दयालु ईश्वर की ओर से कुछ कुछ मिलता ही
है । वैसे ही सत्संग में जो आदमी जाते हैं उनको भी कुछ
न कुछ लाभ हुआ बिना नहीं रहता ; जाते जाते प्रत्यक्ष या अप्र
त्यक्ष कुछ कुछ लाभ हुआ ही करता है । यह लाभ लेने के लिये
सत्संग में लगे रहिये । यही हमारा सिखावन है ।

८९- सत्संग से लाभ (५)

ग

३७३

सत्संग से ईश्वर का वडा लाभ होता है परन्तु यह सब उसी को मि
लता है जो मनुष्य सदा सत्संग में जाते हैं । जो आदमी सत्संग में
किसी दिन जाता है और किसी दिन नहीं जाता या जो पहले क
ई महीने या दो चार वर्ष सत्संग करता है और फिर बर्षों छोड़
देता है उसको ईश्वर का अधिक लाभ नहीं होता । इस लिये अगर
सत्संग का पूरा पूरा लाभ लेना हो और पूरा पूरा आनन्द लेना हो
तो सदा नियम पूर्वक सत्संग में रहना चाहिये । भौंड़ी देर भी सत्स
ग छोड़ देने से उस के फल और आनन्द में बहुत फर्क पड़ जाता है ।
यह बात भी कतोर पर समझाने के लिये एक भक्त राजा साहब
ज कहते थे कि जो फल पेड़ से लगा रहता है वह हवड़ा होता है और
रसमय आने पर रुक रुक कर मोड़ होता है । परन्तु जो फल टूट कर
रनी में गिर जाता है वह पकने के बाद लेश जाता है । वैसे ही
जो आदमी सत्संग में पड़ा रहता है उसकी असली लाभ होता
है ; परन्तु जो आदमी कुछ समय सत्संग में जाकर पीछे उससे अ
लग हो जाता है उसको असली लाभ नहीं मिलता । ऐसे आदमी
को फल के समान है अर्थात् जान में, अनुभव में, भाँके में और प्र
भु प्रेम में अपक्व है । इस से उनको सत्संग का असली लाभ नहीं मि
लता । सत्संग का सच्चा आनन्द लेना हो और उस का महान फल
चखना हो तो सत्संग से बिछुड़ मत जाना बल्कि जैसे बने वैसे

सदा सत्संग में लगे रहना । तब उस का फल पके बिना नहीं रहेगा ।
आप्त अंगत के लो ज्ञान आदि फल भी सब खूब पके रहते हैं ।

सदा सत्संग में लगे रहना । तब उसका फल पकने विना नहीं रहेगा ।
आम, अंगूर, केला, जामुन आदि फल भी जब खूब पके रहते हैं तब
उन्में बहुत मीठा स आती है । फिर सत्संग का फल पकने पर कि
२७४ तना कुछ न आनन्द आवेगा, जरा विचार तो कीजिये । सत्संग का
ऐसा परिपक्व आनन्द लेने के लिये सदा सत्संग में लगे रहना ।
सदा सत्संग में लगे रहना ।

किसी पौधे को गमले में रख कर बहुत दिनों तक पानी से सींचा
हो और पीछे बहुत दिनों तक न सींचें तो वह पौधा पड़ने लगे
लाता है सूखने लगता है और अन्त को उकड़ जाता है । वैसे ही हम
मभी अगर मही नोखा वर्यो सत्संग करके फिर दौड़ दे तो हमारा
जीव प्रभु प्रेम से ही न हो जाता है, सूखने लगता है और उस पर स
त्संग की खूमाही के बदन ब्यवहार के जंगल का अफसोस छा जा
ता है । मन का स्वभाव ही ऐसा है कि बहुत दिनों तक सत्संग किये
रहने पर भी जब वह उससे दूर जाता है तब कमजोर हो जाता है ।
मन में ऐसी निर्वलता न आने देने और प्रभु प्रेम का आनन्द घटने
न देने के लिये सदा सत्संग में पड़े रहना चाहिये ।

जैसे मछलियां पानी विना नहीं रह सकती वैसे सच्चे हरिजन
सत्संग विना नहीं रह सकते । मछलियां पानी के बाहर निकाला
दी जायें तो वे बहुत दूर पड़ाती हैं । वैसे सच्चे भक्तों को सत्संग से
दूर रहना पडे तो उनका जीव तडपने लगता है । जब सत्संग का ऐ
सा नशा चढ़ जाय तभी सत्संग का महान लाभ तथा अलौकिक आन
न्द मिल सकता है । इस लिये ऐसा न हो कि थोड़े दिन सत्संग में जा
यें और थोड़े दिन न जायें वरंच सत्संग का सखा आनन्द लेना हो तो
सत्संग का नशे वाज हो जाना । यही हमारी ललाह है ।

हम वर्यो से सदा खाते पीते रहते हैं तो भी कुछ दिन गखाय तो
शरीर से दुर्बल हो जाते हैं, शरीर की रचना ऐसी है कि उसे हर रोज
जानिय मलें खाने पीने को मिले तभी वह अच्छी हालत में रह सक
ता है । अगर कोई आदमी यह सोचे कि मैं बहुत दिनों से खाया आ

या हैं अव खाने की क्या जरूरत है तो यह ही कह ही। अगर वह ह
 ३७५ ठकर के खाना पीना बन्द कर दे तो यह ले दुबला जाता है। पी देवी
 मार पड़ता है और अन्न को अन्न पानी छोड़ने से मर जाता है। या
 दरखना कि मन का स्वभाव भी ऐसा ही है। उसको सदा अच्छी स
 की गत में रखने की जरूरत है। वह हंस जरूर सत्संग में रखा जाये
 तभी सुख रसकता है तथा पवित्र रह सकता है। इससे बंदले
 अगर को हं आदमी यह सोचे कि हम वर्षों सत्संग कर चुके हैं इस
 लिये अब उसकी क्या जरूरत है और यह सोच कर सत्संग से ह
 ट जाय तो उसका महा संसारी बन जाता है और फिर दिन दिन मा
 या का मोह बढ़ जाता है। इससे जीवनी चे को गिरना जाता है।
 ऐसा न होने देने के लिये सदा सत्संग में जाना चाहिये और खा
 सकर यही समझना चाहिये कि हमें जैसे सदा खाने पीने की ज
 रूरत है वैसे सदा सत्संग की जरूरत है। इस लिये धिरे धिरे स
 त्संग मत करना बरंच लगाना सत्संग करना। यही रुपायी
 विवर्ती है।

जो हरिजन सदा सत्संग करते हैं और सत्संग के लिये जिन्हें ह
 दय से छूट पड़ी रहती है उनको सत्संग करने के कुछ मुख्य मुख्य
 नियम जान लेना चाहिये। यह नियम समझाने के लिये एक
 सेत अपने सत्संगियों से कहते थे कि वन्धुओ सत्संग करने के
 लिये जब तुम अपने घर से निकलोगे तब रास्ते में प्रभु का नाम स्म
 रण करते करते जाना। इससे प्रभु से मिलाप होने की अधिक
 सम्भावना है। जब सत्संग से घर को लौटना तब भी इसी में प्र
 भु का नाम स्मरण करते जाना। ऐसा करने से तुम्हारे हृदय प्रभु
 का वास रहेगा। इस बात को भूल कर मन्दिर में या सत्संग में जा
 ते या आते समय अगर परयाप चला गाने रहोगे और किसी का
 दोष देखा करते गे तो उस वदुनिया दा शी की छोटी छोटी बातें तु

म्हारे हृदय में छुस जायगी और धर उसमें से निकल जाय
 गा। ऐसा न होने देने के लिये हर एक हरिजन को यह बात या

३७६ दयालुता चाहिये और सत्संग में जाते या बहो से लौटते समय

३७६ म्हा रे हृदय में धुस जायंगी ओर ईश्वर उस में से निकल जाय
गा। ऐसा न होने देने के लिये हर एक हरिजन को यह बात या
द रखना चाहिये और सत्संग में जाते या न हो से लोह ते सभ
य प्रभु का नाम स्मरण करना चाहिये। ऐसा करने से सत्संग
की सफलता होती है। इस लिये विधि पूर्वक सत्संग करे। वि
धि पूर्वक सत्संग करे।

जो सत्संग में न बैठे वे सत्संग की असली महिमा जानते हैं। ई
स से वे अपने कुटुम्बियों के साथ बैठ कर सत्संग करते हैं मन्दि
रों में सत्संग करते हैं और गुरुओं तथा हरिजनों से मिल कर श्री
सत्संग की ही बातें कि या करते हैं। कि उनके साथ सा जो कोई एक
ठे हो कर मन्दिरो में आरती करते हैं और उस सभ में बहुत से भज
न गाते हैं। यह भी एक प्रकार का सत्संग है। इस तरह बहुत जगह
हो राखे सत्संग हुआ करता है। और इस की बहुत जरूरत है।
सत्संग त्रिन्दगी सुधारने की बाणी है। इस लिये सत्संग जित
ना बैठे लोगों का उतना ही कल्याण है। इस विषय पर हम बहुत
त जोर देते हैं और चाहते हैं कि बहुत आदमी सत्संग की खूबी
समझे। आशा रखते हैं कि ईश्वर कृपा से इस का अधिक लाभ
लिया जायगा।

स्वी वन्धुओ। सत्संग के प्रभाव के विषय में विधा भिन्न भावसि
द्धि का संवाद बहुत प्रसिद्ध है; उस लंबी कथा को न हो कहने की
जरूरत नहीं है परन्तु यह वात याद कर के ईतना ही जताया
चाहते हैं कि सत्संग केवल और आनन्द की हम जो जो बातें कहते
हैं वे नवीन ही हैं, वरंच सत्संग की खूबी बहुत पूरा ने जमाने से च
ली जाती है और जब तक दुनिया बनी रहेगी जब तक सत्संग
की महिमा का वखान हुआ ही करेगा। सत्संग का प्रभाव ही है

की. सा है कि कोई हरिजन उसका बरवान किये बिना न हि रह सक
ता। स्वभावनः उस की महिमा मुहसे निकल पडती है, सत्संग
३७) में ऐसा बल है। इस लिये सत्संग में लगे रहिये। सत्संग में ल
गे रहिये। सत्संग

सत्संग की श्रुती की ये सब बातें कहने के बाद सत्संग कर
ने वाले सत्संग से विनती है कि हम अग्रम करवी को बुलावे
कि प्रकरवी वीवी य हां आओ, य हां आओ मो व ह न ही आवे
गी। चींटी को व डे आदर से कहें कि चींटी देवी, चींटी देवी,
य हा पधारने की इजाजत तो ऐसा कहने से भी चींटी न ही
आती। परंतु जरूरी चीनी में धुगिरा दे तो चींटी प्रां और म
करवी प्रां तुरंत आप ही डोड आती है।

वे से ही सत्संग कराने वाले गुरु प्रायः एक साधारण लो
गों से कहें कि भाई ब्रो। आप प्रायः पधारने की इजाजत तो
रोज रोज बहुत आदमी न ही आते। परंतु भक्तों में मिठास
हो, अर्थात् नत्व हो, माल हो, प्रभु प्रेम हो, सत्य हो और सभ्य
युक्त अनुसार जान देना आना हो तो आपसे आपसे कड़ी आ
दमी चल आते हैं। इस तरह लो गो को खींचना हो तो सत्सं
ग कराने वाले गुरुओं को स्वयं माल वाला, मिठास वाला
और पवित्रता वाला होना चाहिये। यह सब होत भी सत्सं
ग टिक सकता है और तभी सत्संग बढ़ सकता है। सो स
त्संग करने वाले सत्संगों को मिठास वाला प्रभु प्रेम वाला
और ईद गिर्द का जान लेने वाला। होने की को शिद्द कर
ना चाहिये। ऐसा करने से ही सत्संग टिक सकना है और
रत भी उससे सत्संग लाभ मिल सकता है।

३७८ ८२- बहुत आदमी परमार्थ को बड़ा स
मझते हैं और बहुत आदमी भजन को

बड़ा समझते हैं। इस विषय में सत्संग
के विचार।

इस संसार में जिने भक्त हैं उन सब के मुख्य दोष विचार हो स
भाग

वडा समझते हैं। इस विषय में मनो
के विचार।

ही

इस संसार में जिने भक्त हैं उन सब के मुख्य दो ^{भाग} विभाग हो स
कते हैं। एक परमार्थ भक्त और दूसरे भजनानन्दी भक्त। परमा
र्थ भक्त कहते हैं कि हमारे जिनगी परमार्थ के लिये है। हम
दूसरे के किय हुए शुभ कामों से लाभ उठाते हैं इस लिये हम
में भी कुछ शुभ काम करना चाहिये। जैसे - हम किसी के रु
दवाय हुए ता लाव का पानी पिते हैं, किसी के बोये हुए पेड़ का
फल खाते हैं, किसी के बनाये मकान में रहते हैं, किसी के पाले हु
ए पशु से का मिलता है, किसी के बनाये रास्ते पर चलते हैं, किसी
की रची पुस्तक से लाभ उठाते हैं, किसी की चलायी गाडियों में
हम सवार होते हैं, किसी के लगाये वगीचे में हम रहलते जाते हैं,
किसी का कीना हुआ बाजा हम सुनते हैं। इस प्रकार कितनी ही
वातों में दूसरे की बनायी व हुत व हुत चीजों से हम फायदा उठा
ते हैं इस लिये हमें भी दूसरे के लिये जहां तक बने अलाह के का
म करने चाहिये।

इसके सिवा परमार्थ भक्त यह कहते हैं कि भजन करने में जो
आनन्द मिलता है वह अकेले अपने को मिलता है परन्तु परमा
र्थ के काम करने में कहे तरह का क हस हना प डता है। प्रभु की
स्वाति ए अपना आनन्द दौड देना और दूसरे के दुःख में हिस्सा
लेना बहुत बड़ी बात है, इससे परमार्थ का मूल्य कहीं अधिक है।
यह समझ कर हम भजन में परमार्थ को बडा मानते हैं और ऐसे
का मो में लग रहे रहना चाहते हैं।

२७६

परमार्थ भक्त न हा से मा कहते हैं वही भजनानन्दी भक्त य
ह कहते हैं कि परमार्थ उ ची बात है इसमें कुछ सन्देह नहीं। परन्तु
परमार्थ का काम करने से पहले उसकी योग्यता हममें आनी चाहि

ये। याद रखना कि प ह ले बिना खूब प्रजनन कि ये परमार्थ के काम करने की योग्यता मनुष्य में नहीं आसकती। जिनने प्रकार के महा त सद्गुरु हैं वे सब परम रूपालु परमात्मा से आते हैं। इसलिये जब तक प्रभु से सब लेना हमें न आवे तब तक हम दूसरों के ही क ही क उपयोगी नहीं होसकते। जिसके पास कुछ होता है वह दूसरों को देसकता है। परन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है वह दूसरों को क्या देसकता है ? जैसे कुरु में ही पानी न हो तो जैन में का हा से आसकता है ? इसलिये परमार्थ करने से प ह ले अपने अन्दर के सद्गुरु को विकसित करना चाहिये; अपनी योग्यता बढ़ाता चाहिये और कभी न घटनेवाले परमानन्द पूर्ण तत्त्व से, ऐ अष्ट स्वरों से परमार्थ का बीज लेना सीखना चाहिये। तभी वह परमार्थ अन्ततः करि सकता है और वरु अर्द्ध से अर्द्ध फल देसकता है। जब तक प्रजनन करके परम रूपालु परमात्मा से सद्गुरु तथा योग्यता न प्राप्त करले तब तक महान परमार्थ नहीं होसकता। छोटे छोटे परमार्थ के काम होते भी हैं तो वे अन्ततः कत ही टिक सकने और वे काम भी केरल के होते हैं। इसका मो से दुनिया को कुछ बहुत लाभ नहीं होता। इसलिये भजन द्वारा परम रूपालु परमात्मा से अने प्रकार के सद्गुरु का खूब आकर्षण करके पीछे परमार्थ के कामों में लगना चाहिये। परमार्थ के कामों में लगना चाहिये। परमार्थ को काम करने से वरु ले यह बात भी याद रखना चाहिये कि परम रूपालु परमात्मा के लिये जो परमार्थ होता है उसी की कीमत है। जो परमार्थ अपने मत लय के लिये होता है, लोक लाभ से होता है, मानस की दा के लिये होता है, दवा देखी होता है, किसी के दवा व या सिफारिश से होता है या हे से ही किसी दूसरे व्यवहार के कारण होता है उस परमार्थ की कीमत सच्चे मन को न समझे या ईश्वर के दरबार

मे. कुछ बहुत न हो है। सरं हा कि दो पो रय वि तापं छो न ही उ ड स
कता ओ र जे से दो प हि ये वि ना गा डी न ही च ल सक ती ये से न
ने

मे कुद्वव हुत न ही है। सरा हा कि दो पोर ख वितापे छो न ही उडस
कता और रजे से दोप हिये विना गा डी न ही चल सकती। ये से न
गन और परमा र्थ है न दो अंगों के वे ना भक्ति फली भूत न ही हो
सकती। इसाले ये हुन दो नों अंगों की आवश्यकता है। उंचे दर्जे
के म हा न भक्तों में ये दो नों अंग होते हैं। कितने ही भक्त ऐसे भी
होते हैं। जिनमें कोई एक ही मुख्य अंग होता है। अर्थात् कि
सी भक्त में परमार्थ का अंग मुख्य होता है। और किसी भक्त में
भजन का अंग मुख्य होता है। इसाले ये स्वभाविक नोर पर जिस
में जो अंग मुख्य हो उसका उसी के अनुसार चलना अच्छा है।

६३- हर मनुष्य को अपनी अवस्था देखकर
धर्म करना चाहिये।

जगत में परोपकार और दया के अनेक काम हैं और वे सब ध
र्म के काम हैं। इसमें कुछ भी सन्देह न ही है। परन्तु कितने ही प
रमार्थ के काम बहुत अच्छे होने पर भी सब आदों से न ही हो
सकते। इसलिये धर्म का कोई काम करने से पहले यह विचार
ना चाहिये कि अभी प्रभु हमसे किस प्रकार का काम करना
चाहता है और किस प्रकार का काम नही होकर ना चाहता इस
की खूब समझ होनी चाहिये। परन्तु अफसोस है कि हम मनु
ष्य बहुत आदमियों को ठीक ठीक न ही होती। ऐसे आदमियों के
धर्म में बहुत गड़बड़ हो जाती है। ऐसा न ही देने के लिये हर स
क आदमी को खास करके विचार करना चाहिये कि हमारा
धर्म क्या है और इस समय हमें क्या करना चाहिये। किसी स्त्री
के छोटे छोटे बच्चे और वह उन लड़कों को ठीक ठीक न समझा
ले आपस में दर में दर्हा करके नासा करे और लड़के पीछे से
रोया करे तब तो धर्म मचाया करे तो कहा जायगा कि इस
स्त्री ने अपनी स्थिति का धर्म न ही पाला। स उ प्रे पि दृष्टी न क

रना बहुत अच्छी बात है इस लिये वह स्त्री प्रदावाली बे व्याव
या होव कही जा स-कती है परन्तु उसको निर्दोष बालों कीने क
माता होने की ईज्जन ही मिल सकती। क्योंकि माता का जो क
र्तव्य है उसे वह भी कठीन ही करती है। अपनी अवस्था का ध
र्म न समझने से ईसी प्रकार की गड़बड़ होती है तथा आदमी ध
र्म के एक ही अंग में रह जाता है। ऐसा होने देने के लिये हर
मनुष्य को अपनी अवस्था का धर्म जान लेना चाहिये।

कोई आदमी बालवश्रीवाला होकर भी घर में हस्ती के का
म में मन लगाने और बड़ी बड़ी कामनाएं करने लगा तब तक
लगाये मन्दिरों में फिराकर तथा अपने को भक्त कहलवाया
करे तो वह देखकर कितने आदमी उस से अच्छा भक्त सम
झते हैं परन्तु वह न तो प्रेमी कहलाता है और न योग्य पिता।
क्योंकि वह भक्तिके कुछ वाही साधनों को करता है परन्तु अ
पनी स्थिति का धर्म ही समझता। इससे वह अपनी स्त्री और
बच्चों की ओर लापरवाही दिखाता है। ऐसा करना उचित न
ही है और न पूरा धर्म पालन है।

कोई आदमी किसी अमीर के झंझों में फँस हो परन्तु परमा
र्थी काम में लिये चन्दा डगा करने तथा दूसरे आदमियों की स
दक करने में लगा रहे और मालिक के काम में ध्यान न दे, उस
की तलवारवा कर अपना वक्त दूसरे काम में बितावे तो वह आ
दमी परमार्थी कहलाता है परन्तु अच्छा नोकर ही कहला
ता। क्योंकि वह अपने मालिक की तरफ का कर्तव्य पालने में ला
परवाही दिखाता है और उसे छोड़कर दूसरे काम में मिरल जाता है
। ऐसा करना अपनी स्थिति का धर्म पालना ही कहलाता।
अगर ऐसा ही करना हो तो अपने मालिक की नोकरी छोड़ देना
चाहिये। नहीं तो कहीं कहीं ध्यान देकर नोकरों कराना चा
हिये।

कुटुम्ब में माता पति अपने आसरे पड़ा हुआ दूसरा कोई व
ह नजदीकी वीमार हो और उसको छोड़कर कोई आदमी तीर्थ

कुटुम्ब में मा वा प या अपने आसरे पडा हुआ को हव
इतना दी की वी मार हो और उस को छो ड कर को ह आदमी नी थो
में फिर करे तो उस का य ह काम ठीक न हीं कहलाता को कि
तीर्थ करना अच्छी बात है और य ह भी धर्म का काम है परन्तु स
गे सम्वन्धि को वी मारी में दुःख पाते छो ड कर तीर्थ में भाग
जाना अच्छा न हीं । बहुत आदमी अपनी स्थिति का धर्म न हीं
समझते, इस से इस किस्म की भूलें किया करते हैं । ऐसी भूल
न होने देने के लिये अपनी स्थिति का धर्म समझ लेना चाहि
ये और इस का विचार करना चाहिये कि अभी प्रभु हम से क्या
काम करना चाहता है ।

वधुओ । आप का ये दृष्टान्त देकर हम पर हमसझाता चा
हते हैं कि इस जगत में बहुत काम अच्छे हैं और बहुत काम प
रमार्थ के हैं तथा उन कामों को करने के लिये शास्त्र में कहा है
और उन कामों को करने से बहुत तरफ के फायदे भी होते हैं प
रन्तु वे अच्छे काम भी अगर अपनी अवस्था के अनुकूल न हो औ
र न हो सकें तो इस में कुछ पाप न हीं है । इस लिये य ह काम प
रमार्थ का है, य ह काम बहुत अच्छा है और य ह काम करने को
शास्त्र में कहा है इतनी ही बातें देख कर उस काम में हाथ लगा
देना वरंच इस समय हमारी स्थिति कैसी है प्रभु हम से क्या
करना चाहता है इस का विचार कर के अपनी हालत के मुता
विक धर्म करना चाहिये । ऐसा करने पर बहुत अच्छी तरफ
धर्म किया जा सकता है और थोड़े में भी प्रभु बहुत लाभ दे
ता है । अपनी स्थिति से वा हर काम करने जाते तो बह ध
र्म अधूरा रह जाता है और उस में कूहा होता है । ऐसा न हो
ने देने के लिये है सियत का धर्म करना सीखिये ।

८४- अच्छे आदमियों के पास भक्त होना
कोई बड़ी बात नहीं है; खराब आदमियों
से भक्त की तरफ रुकना ही खू
बी की बात है।

माला, शिलफ और कंठी लगाने; नाचने, गाने और सफा
धर्मार्थ का काम कर देने से व्यवहार में जो मुख्य भक्त कह
लाया करते हैं उनमें और जो मुख्य भगवद्धर्म के अनुसार
राम कर रहे हैं और भगवान के अनन्य भक्त हैं उनमें बहुत
अन्तर होता है। जो दिखाता भक्त होता है वे जगत के बाहरी फेर
बदल को बरदाश्त नहीं कर सकते। परन्तु जो अनन्य भक्त है,
जो हृदय से भक्त है और जो ईश्वर की महिमा तर्जुन सजगत्
की रचना समझे इस भक्त है उन पर जगत के फेर बदल का व
हुत असर नहीं होता। इससे वे पुरे सयोगों में भी तर्जुन आ
दमियों के साथ भी अच्छे वर्तन करते हैं। यह बात समझने
के लिये एक भक्त राजा महाराज कहते थे कि गुलाब का फूल
अगर गंधी जगह में उगा होता वहां भी सुगंध दिय बिना न
ही रहता। वैसे ही जो सच्चे हैं, जो भक्ति रस में लगये हैं और जो
प्रभु प्रेम में शरकोर हैं वे किसी भी मोह पर नहीं गिरते। ईश्वर
ना ही नहीं, जब खराब आदमियों से काम पड़ता है तब उन की
और कसौटी परीक्षा होती है और वे उस कसौटी परीक्षा में हर
बार पास होते हैं। परन्तु जो दिखाता भक्त है, जो नाम के भक्त
हैं और आदमियों भक्त हैं वे ऐसे मोहों पर नहीं गिर सकते
। अच्छे आदमियों के पास ही वे भक्त रह सकते हैं। जैसे, वे
कर्म का राही ब्राह्मणों के सामने भक्त रहते हैं, मन्दिर में न
था मन्दिरों के पुजारियों के सामने भक्त रहते हैं, दान देने

वाले अमीरों के सामने भक्त रहते हैं, अच्छे अच्छे अफसरों के
सामने भक्त रहते हैं कोई परदेही भला मानस आजाय तो उ

वाले अभीरे के सामने भक्त रहते हैं; अच्छे अच्छे अफसरे के
 सामने भक्त रहते हैं, कोई परदेही भला मानस आजाय तो उ
 स के सामने भक्त रहते हैं; प्रसिद्ध बड़े आदमी के सामने भ
 क्त रहते हैं; तीर्थ में बहाने पराडों के सामने भक्त रहते हैं;
 अपने गुरु ब्राह्मण सरेनामी पुरुषों के सामने भक्त रहते हैं और
 जिसके साथ अपना मन मिल जाता है उस आदमी के सा
 मने भक्त रहते हैं। परन्तु जो हृदय से गले हुए भक्त हैं जो ई
 श्वर के अनन्य भक्त हैं और जो भगवान की माहिमा तथा म
 नुष्य की कमजोरी समझे हुए भक्त हैं वे अच्छे मनुष्यों से स
 लूक रखने के सिवा उद्धार मनुष्यों के साथ भी भक्त के तौर
 पर वर्तित्व करते हैं; निठले आदमियों से भी भक्त के तौर
 पर वर्तित्व करते हैं, कड़वा बचन बोलने वाले तथा पराधी
 निन्दा करने वाले मनुष्यों सभी भक्त के तौर पर वर्तित्व करते
 हैं; चिड़चिड़े स्वभाव के, क्रोधी और होश हवास के साथ
 बातचीत करने वाले लोगों से भी भक्त के तौर पर वर्तित्व
 करते हैं; व्यभिचारी शराबी लुब्ध वदमाश झूठे आदमि
 यों के साथ भी भक्त के तौर पर वर्तित्व करते हैं। अनदेखने
 उडाउ, लोभी, कंगाल और सनकी आदमियों के साथ भी
 वे भक्त के तौर पर वर्तित्व करते हैं; बदनामी फैलाने वाले, पो
 लेंपोल चलाने वाले दूसरों को ठगने वाले, मारपीट करने
 वाले, हल्के दर्जे की सोहबत में मड़े रहने वाले वातवात
 में भड़क कर आसकाई मली कर डालने वाले आदमियों से
 भी वे भक्त को ही वर्तित्व करते हैं। इस तरह हर एक आदमि
 यों से भी निनाहले जाता है आता है और ऐसे आदमियों
 के पास भी अपनी भक्ति को रिकार रखना है आता है।
 उनकी भक्ति ऐसा न भी हुई और रिपक होती है। इससे

२८५

क

वे उंचे भक्त गिने जाते हैं। परन्तु जो कुछ भक्त होते हैं, जो अधूरे भक्त होते हैं और जो नाममात्र के भक्त होते हैं वे ऐसे आदमियों के सामने अपनी भक्ति बनाये नहीं रख सकते। इस लिये समझ लेना कि कहे जाने वाले भक्तों में और सच्चे भक्तों में बहुत अधिक अन्तर होता है। इस के सिवा बहुत ही समझ लेना कि अच्छे आदमियों के सामने भक्त रहना को ईव जीवात नहीं है। पुरे प्रसन्न परत था पुरे आदमियों के साथ भक्त रहना और ऐसे समय भी अपनी भक्ति को सावित रखना ही व जीवात है। इस लिये रख रख आदमियों के साथ भी भक्त के तौर पर वर्तन करने वाले भक्त बनिये। ऐसा बनिये कि अपने दुश्मनों के साथ भी भक्त का वर्तन कर सकें। तभी ईश्वर के समक्ष सच्चे भक्त गिने जा सकेंगे।

२८६

८५- कितनी ही बार छोटे छोटे काम कर
वे से प्रभु नितना प्रसन्न होता है उन
ना बड़े बड़े काम करते से भी नहीं होता
इस लिये प्रभु को प्रसन्न करने की कुं
जी जान लेना चाहिये।

त. इस जगत् में बहुत आदमी धनवान हैं, बहुत आदमी वि
मि. दान हैं, बहुत आदमी शूरवीर हैं, बहुत आदमी आवि
प्र. श्कार कवृत्तिके हैं, बहुत आदमी कविता बनाने के भाव्या
रखाने देने की शक्तिवाले हैं, बहुत आदमी लोगों को वश
में करने की शक्ति रखते हैं और बहुत से आदमी जो बहुत
लोग धार्मिक हैं, निष्ठा किया करते हैं। य सब आद
मी अपनी अपनी लाईन में और अपनी अपनी सीमा में सम
य के अनुसार और आसपास के लोगों के अनुसार अच्छे
अच्छे तथा बड़े बड़े काम किया करते हैं। जैसे, कोई अमी

र धर्मशाला बनवाता है, सदावर्त चलाता है, मन्दिर उठ
वाता है, दवाखाना खोलता है, स्कूल चलाता है या अना

रुधर्म इत्यादि बनावता है; सदावर्त चलाता है; मन्दिर उठ
वाता है; दवाखाना बोलता है; स्कूल चलाता है; या अना-
थालय में मदद करता है। बहुतों को हा किम नये नये कायदे
बना कर प्रजा के जानो माल की रक्षा का उपाय करते हैं। को
ह को हरा ज्ञात था दीवान प्रजा का अज्ञान दूर करने के लिये
शिक्षा फैलाने का काम करते हैं। को ह को ह गुरु धर्म का उपदे-
श देते हैं और लोगों की धर्म भावना जागृत रखने के लिये बहु-
त नेष्टा करते हैं। कितने ही विद्वान समय के अनुरूप विचारों
की पुस्तकें रचते हैं तथा व्याख्यान देते हैं और तरह तरह की उ-
पयोगी सभाएं स्थापित करते हैं। कितने ही आविष्कारक अ-
पने फायदे तथा लोगों के लाभ के लिये नये नये आविष्कार
करते हैं। कितने ही चतुर कारीगर शिल्प कला की नयी नयी
हिन्मते लजाया करते हैं। इस प्रकार हर लाह न में कुछ कुछ अ-
न्ये काम हुआ करते हैं। तो भी इन सब कामों के करने में आ-
कर ऐसा होता है कि -

कितने काम खास अपने मतलब के लिये ही किये जाते
हैं; कितने काम हज्जत जाने के लिये किये जाते हैं; कित-
ने काम देखा देखी किये जाते हैं; कितने काम लाचारी द-
रजे किये जाते हैं; कितने काम दूसरों को खुश रखने के
लिये किये जाते हैं; कितने काम जाति विरादरी के रिवाज
के कारण किये जाते हैं; कितने काम अभिमान के कारण
था अपना बड़प्पन दिखाने के लिये किये जाते हैं; कितने
काम शरमा शरमी किये जाते हैं; कितने काम वाप के किये
हुए वसीयतनामे के कारण किये जाते हैं; कितने काम शिवा
बलने के लिये किये जाते हैं और कितने काम पैसा पाकर मौज
शौक करने के लिये किये जाते हैं। पर-तु खास प्रभु के लिये

ही किया गया काम तो कोई ही कोई होते हैं। इन कार्यों से जो काम होते हैं वे चाहे कितने ही बड़े हो परन्तु सर्व शक्तिमान महाब्रह्म के दरबार में उनकी कुछ बहुत कीमत नहीं होती। काम चाहे छोटा हो ले किन समर्थ ईश्वर के लिये किया गया हो तो उसकी कीमत बहुत बढ़ जाती है। जैसे -

लाचारी दरजे वाला व खुद बाने वाले सेठ को जितना पुराण होता है उससे अधिक पुरुष प्रभु के लिये पेड़ में पानी सीबने वाले गरीब किसान को कभी कभी होता है। महादूरफराउ में अधिक धन दा देने वाले अमीरों को ईश्वर की ओर से जितना लाभ मिलता है उससे गरीबों को बिंदु की भर आया देने का बुढ़ीया को, बाल को को बनाया या जरा जरा गुंडे देने वाले भावुक भक्त को और ऐन मौके पर गरीबों को धेला धरा म देने वालों गरीब आदमी को अधिक फायदा होता है। कोई अमीर अपने नाम के लिये पाठ शाला खोले तो वह काम प्रभु को जितना पसन्द आता है उससे अधिक पुराण उस गरीब को होता है जो अपनी फटी पुरानी पुस्तकें दूसरे लाभक गरीब विद्यार्थियों को ईश्वर के लिये देता है। जो आदमी अभिमान से बाधन कमाने के लिये नयी नयी चीजें ईजात करता है उसे जितना लाभ होता है उससे ज्यादा लाभ उस भक्त को होता है जो उस ईजाद से लाभ उठाते समय ईश्वर को याद करके उसका उपकार मानता है। महात्माओं का वचन है कि सर्व शक्तिमान महाब्रह्म तुम्हारे दोटे बड़े कामों को ही नहीं देखता; क्योंकि दोरे बड़े काम तो संयोग के आधार पर होते हैं इससे उन कामों के करने वाले को बलिहारी नहीं है। परन्तु मन में ईश्वर की भावना रखना बहुत बड़ी बात है। क्योंकि प्रभु हमारे अन्तःकरण की भावना को देखता है; जैसी भाव

ना होती है वे साफल मिलता है। महात्मा का सिद्धांत है। ईश्वर का मन में उन भावना होती और ईश्वर के लिये भले का

ना होती है वेसाफल मिलता है य ह्मा ह्मा का सि द्धान्त है। ई-
 सकारण मन में उत्तम भावना होती और ईश्वर के लिये भले का
 म. किये जाने हो तो उन छोटे कामों को भी प्रभु बड़ा मान लेता है
 और बड़ा फल दे देता है। बड़ा काम भी अगर अपने मतलब के
 लिये ही किया हो, अपने अभिमान के लिये। हिं किया हो, मन
 म सो सने मन सो सने किया हो और मान मर्यादा की ईच्छा से ही
 किया हो तो उस बड़े काम की भी ईश्वर के सामने कुछ बड़न की
 मत न ही होती। इस लिये भ्रातृयो अगर आप अपने छोटे कामों
 को भी जग मगाना चाहते हो और छोटे कामों से भी बड़ा फल
 लेना हो तो भावर रख कर और लोभ लालच छोड़ कर सर्व शक्ति
 मान म हात ईश्वर के लिये शुद्ध काम की लिये। नव भौंडे से भी
 बड़न हो जायगा।

२८६

८६- आनन्द, आनन्द और आवन्द।

ओ हरिजनो। हमारा पैदा करने वाला जो ईश्वर है वह अनन्द
 स्वरूप है, ईतना ही, न ही शास्त्र में उसको आनन्द का भी आनन्द
 अर्थात् परमानन्द कहा है। ऐसे परमानन्द प्रभु से हम उत्पन्न
 हुए हैं। इस लिये हमें भी आनन्द में रहना सीखना चाहिये।

बन्धुओ। हमारे परम रूपालु आनन्दी पिता प्रभु ने इस जग
 त में आनन्द भोगने के लिये ही हमें उत्पन्न किया है। ईतना ही न
 ही, वरंच इस लिये हमें उत्तम मनुष्य जन्म दिया है कि मरने के बाद
 भी हम मोक्षधाम में प्रभु का आनन्द भोग सकें। सा शं शय
 है कि अनन्द हम सब के जीवका भी जीवन है। इस लिये हमें स
 दा ईश्वरी आनन्द भोगने की कोशिश करना चाहिये।

ईतना ही न ही कि हमारा ईश्वर आनन्दी है, वरंच उसने हम
 मारे लिये जो धर्म बनाया है वह धर्म भी हमें आनन्द के रास्ते में

ही ले जाने वाला है। इस लिये जैसे वने वैसे अधिक अधिक आनन्द लेना चाहिये। ईश्वरी आनन्द भोग लेने लिये ही हमारा जन्म है।

ईश्वर आनन्द रूप है और धर्म भी हमें आनन्द के रास्ते में ही ले जाता है; इससे भक्ति भी आनन्द के साथ ही साथ रहती है। इस कारण ईश्वर की भक्ति करने वाले भक्त सदा आनन्दी होते हैं। ईश्वर आनन्द स्वरूप है इससे उसकी भक्ति करने वाले भक्त भी आनन्द रूप बनाने हैं। जैसा ईश्वर होता है वैसे भक्त बनाने हैं। और जैसी भावना रखे वैसे फल मिलता है। यह सास्त्र का सिद्धान्त है। इस लिये जो भक्त अपने ईश्वर को आनन्द रूप समझ कर उसकी भक्ति करते हैं वे दिन दिन आनन्दी बनने जाते हैं। इतना ही नहीं वे दूसरों को भी अपना आनन्द देने जाते हैं तथा आनन्द लेने की कुंजी बनाने जाते हैं।

२६०

भक्तों को भगवान का सदा आनन्द के से मिलता है और कभी मिलता है यह आप जानते हैं। इसका कारण यह है कि हृदय की पवित्रता का दूसरा नाम आनन्द है और हृदय की पवित्रता भक्तों में होती है इससे वे ईश्वरी आनन्द भोगते हैं। प्रादरवना कि आनन्द का असोल पोधा पवित्रता की उन्नति भूमि में ही उगता है और ऐसी पवित्रता की उन्नति भूमि सदा भक्तों का हृदय है। इस लिये असल आनन्द सदा भक्तों के अन्तःकरण में ही होता है।

२६१

जिसके हृदय में अधिक पवित्रता होती है उसके हृदय में अधिक आनन्द होता है। अधिक पवित्रता कभी करती है यह जान लें। जो ईश्वरी नियम अधिक मानता है उसके अन्तःकरण में अधिक पवित्रता रहती है इससे वह अधिक आनन्द भोगता है। इस लिये अगर रखने वाले अलौकिक ईश्वरी आनन्द भोगना हो तो प्रभु के नियम पर चलना चाहिये और जैसे व

वे वैसे अधिक से अधिक पवित्र रहना चाहिये।
पर्यटन करने से जैसे चारों ओर उजाला फैल जाता है वैसे हृदय के

वे-वे-से अधिक से अधिक पवित्र रहना चाहिये ।

सूर्य उगने से जे-से-चारे ओर उजाला फैल जाता है-वे-से हृदय के पवित्र आनन्दी भक्त जहां जाते हैं-वहां आनन्द फैलाया करते हैं ।

जे-से गुलाब के फूल के आसपास बढिया सुगन्ध फैली रहती है-वे-से पवित्र भक्त जहां रहते हैं-वहां आनन्द फैलता है ।

भगवद् भक्तों के हृदय में अद्भुत आनन्द भरे रहने का क्या कारण है आप जानते हैं ? इससे समझाने के लिये सन्त कहते हैं-कि हमारे घर जन को दया हुना आता है, बाहरी दोस्ती वाता मित्र आता है-या को इस दुर्गामी वज्र आदमी आता है तब हमें कितना अधिक आनन्द होता है ? विचार कीजिये-कि जब हे २६९ से आदमियों के भी घर आने पर आनन्द होता है-तब जिन भक्तों के हृदय में भगवान आप पधारता है-उनको महा आनन्द होने में क्या आश्चर्य है ? इस लिये भक्तों के आनन्द का वास-कारण यह होता है-कि उन के हृदय में भगवान पधारता है । इससे वे अखण्ड आनन्द भोगते हैं । ऐसा अखण्ड आनन्द दरकार होता है सा करना चाहिये-कि हमारे हृदय में प्रभु पधारे । यह आनन्द पाने की युक्ति है ।

जिस भक्तों के हृदय में भगवान पधारता है, जो भक्त ईश्वर का माहात्म्य समझता है और जिसने सर्व शक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्ड के नथ के महान सदगुरुओं का अध्ययन किया है-उस भक्त को ईश्वर के जात का आनन्द मिलता और उस भक्त को आनन्द के कारण दो-दो-दूरव शूल जाता क्या आश्चर्य है ? ऐसे-ऐसे कारणों से भक्त आनन्द में रहते हैं ।

ईश्वरी आनन्द भोगने से भक्तों को दूसरा लाभ यह होता है-कि वे शुभकर्मों में सदा आगे बढ़ते जाते हैं और उससे कभी कदराते नहीं । ज्यो-ज्यो शुभकर्म करते जाते हैं-व्यो-व्यो उनका आनन्द बढ़ता जाता है । इससे और अच्छे-अच्छे काम होते जाते हैं-

तथा भक्त ईश्वर के निकट पहुँचने जाते हैं।

आनन्द से शुभ कर्म करने में कैसे आगे बढ़ सकते हैं इस विषय को समझाने के लिये सतक कहते हैं कि जब लडाई हुई तीर्थी और पल्लव में जो शलाका होता था तब पकले जमाने के बहादुर राजपूतों के पास चारण सिंधुर राग में उनकी बड़ाई का गीत गाते थे। आज के जमाने में अंगरेजी फौज में जो शोभा उनके लिये तरह तरह के फौजी बाजे बजाये जाते हैं। इससे फौज को आगे बढ़ने में मदद मिलती है। वैसे ही ईश्वरी आनन्द भक्तों को सत्कर्म करने में आगे बढ़ाता है आनन्द से शुभ कर्म करने में उतेजन मिलता है इससे कितने ही शुभ कर्म किये जा सकते हैं। इतना ही नहीं कितनी ही बार बहुत दौरे दौरे तथा अनजान भक्त भी लोगों के कल्याण के लिये ही बहुत बड़े काम कर डालते हैं। इसका कारण यह है कि उनके हृदय में ईश्वरी आनन्द होता है। इससे दूसरे से न हो सकेने योग्य काम के कर डालते हैं। ईश्वरी आनन्द में ऐसी रबूकी है। इस लिये हम सब को ईश्वरी आनन्द लेने की कोशिश करना चाहिये।

७- आनन्द, आनन्द और आनन्द। (२)

इस समय जब कि आनन्द लेने की बात चल रही है तब इसमें यह भी समझ लेना चाहिये कि संसारियों के सुख और भक्तों के आनन्द में बहुत बड़ा अन्तर होता है। संसारी लोगो का जो सुख है वह जगत के बाहरी पदार्थों में रहता है और भक्तों का जो आनन्द है वह ईश्वर को जानने तथा उसका भजन करने से होता है। उनका आनन्द भावना में होता है। इससे कोई भक्त भ्रामा से आनन्द पाता है कोई भक्त ईश्वर का उपकार मानने से आनन्द पाता है, कोई भक्त परेपकार करने से आनन्द पाता है, कोई भक्त परेपकार करने से आनन्द पाता है, कोई भक्त सु

विभक्त से आनन्द पाता है, कोई भक्त भजन करने से आनन्द पाता

मिरन से आनन्द पाता है को ईश्वर भक्त भजन करने से आनन्द पाता है, को ईश्वर भक्त भगवान की भक्ति मागने से आनन्द पाता है और को ईश्वर भक्त भगवान के वदपन से आनन्द पाता है। इस प्रकार भिन्न भिन्न भक्त अपने अन्दर के भिन्न भिन्न गुणों से अपनी भावना के अनुसार ईश्वरी आनन्द हासिल करते हैं। सारी लोगों को ऐसा आनन्द नहीं मिलता उन्हे जब अपने मन लाकड़ का रुख की वलु से मिलती है तभी आनन्द मिल सकता है। और वाहर की वलु से मिलने में बहुत पराधीनता रहती है। फिर वाहर की वलुओं से जो आनन्द मिलता है वह देर तक नहीं रहता। इसके सिवा और भी अनेक विध उपद्रव हैं। परन्तु भक्त अपनी भावना के अनुसार अन्तःकरण से जो ईश्वरी आनन्द प्राप्त करते हैं उसमें ऐसा कोई बिघ्न नहीं पड़ता। या दरखाना कि सारी लोगों की सुख में और भक्तों के ईश्वरी आनन्द में बहुत बड़ा अंतर है। इसलिये आइयो। रुखा से हिलने का लोप डके पत्ते सरीखे सारी लोगों के सुख में मत रह जाता वरन् अखंड अविनाशी ईश्वरी आनन्द लेने की चेष्टा करना।

भक्तों के हृदय में मौजूद ईश्वरी आनन्द कितना महान और कितना दृढ़ होता है यह आपको मालुम है १ इसके लिये मैं ना कहने है कि बहुत मजबूत जड़ वाला और अच्छी जगह जमा हुआ वज्र पोधा जैसे हुवा के शों के सेज हीं डबडता नभास मुद्र की लहरों से जैसे बड़ी बड़ा जहीं गिरती वैसे भक्तों के हृदय में जो ईश्वरी आनन्द जमा होता है वह दूर खसे रोग से कज से या इस तरह के और किसी कारण से नहीं छटता। इनका प्रह आनन्द सदा बनार रहता है। वह प्रभु प्रेम से जन्मा रहता है। इससे जनतक इनके हृदय में प्रभु का प्रेम रहता है नवतक इनके हृदय से आनन्द नहीं जाता। वंधुओं। इससे आपस में स

केंगे किन्तु तो के आनन्द में और संसारी लोगों के आनन्द में किता
 गावड़ा फर्क है। संसारी लोगो को तो जब सब उन के मन लायक हो
 तो आनन्द मिलता है। जैसे - शरीर नो रोग हो, पास में खुब धन हो,
 रोजगार धंधा खुब चलता हो और मिष्टान के आदमी मिले हो
 तब वे आनन्द भोग सकते हैं। अगर इस में प्रतिकूलता हो तो वे
 आनन्द नहीं पास करते; बल्कि उल्टे उल्टे बहुत दुःख होता है। भ
 २६४ क्तो का आनन्द ऐसी बाहरी वस्तुओं में नहीं होता। उनका आन
 न्द तो भगवान में - जहां उनका चित रहता है उसी में रहता है।
 इससे वे अनेक प्रकार के दुःखों में भी ईश्वरी आनन्द भोगते हैं।
 इस तरह भक्तों के आनन्द में और संसारी को के आनन्द में बड़ा फ
 र्क है। इन दो नो बातों का फर्क समझ लेना अच्छा है। हरिभक्त
 होते हैं कि आनन्द और सुख इन दो शब्दों में फर्क है। जो सुख है व
 ह ईर्द गिर्द के संयोगों के आधार पर है और जो आनन्द है उसका
 सम्बन्ध अन्तःकरण से है क्योंकि वह हृदय से बाहर आता है। इस
 से समझा जा सकता है कि संसारी लोगो को जो सुख मिलता है
 उस सुख का सम्बन्ध बाहर की वस्तुओं से है उन वस्तुओं के छट
 ने बढने से उनका सुख छट बढ सकता है। परन्तु भक्तों के हृद
 य में जो ईश्वरी आनन्द होता है उसका सम्बन्ध ईश्वर से और अ
 पने अन्तःकरण से होता है इससे सब समय और सब जगह वह
 आनन्द एक समान होता है। इस प्रकार संसारी जो के सुख में
 और भक्तों के आनन्द में बड़ा अन्तर है। इस लिये वन्द्युओं। श्री
 जी देर के और अडचल भरे सुख की ओर मत दोड़ीये वरन् जैसे
 से वने वैसे भक्तों का ईश्वरी आनन्द हासिल करने की कोशि
 श कीजिये।

कितनी ही बार कितने भक्तों को कितने किसके दुःख हो
 ते हैं तो भी वे आनन्द में रहते हैं। इसका क्या कारण है आप

जानते हैं १ इसे समझाने के लिये सन्त कहते हैं कि किसी

जानते हैं १ ईसे समझाने के लिये सन्त कहते हैं कि किसी
 किले पर दुश्मन की पलटन ने घेरा डाला है ईस से पानी न
 मिलता परन्तु किले के अन्दर कुआ हो तो उस पलटन को पा
 नी का दुःख न ही सहता पड़ता। वैसे ही जिन भक्तों के हृदय
 में ईश्वरी आनन्द का सराबार रहता है उन पर एक भी बाहरी दुः
 ख आपड़े और उस दुःख में वे घिर जायें तो भी वे रंजन ही मा
 नते; भीख तो न ही खा लाए हीं जाते क्यों कि उनके हृदय में उनमें
 ईश्वरी आनन्द मिलाकर रहता है। ईससे बाहर के छोटे छोटे दुःख
 २६५ की उन्हें परान ही होती। वे दुःख दुसरे को चाहे भारी लगते
 हों परन्तु हृदय में ईश्वरी आनन्द पाने वाले भक्तों के लिये कि
 सी गिनती में न हीं। ईसका कारण यह है कि वे घड़ी भर के वा
 द ही दुःखों को न ही देखते। वे जो अपने हृदय में मोनूद ईश्वरी
 आनन्द को ही देखा करते हैं। ईसने दुःख के समय भी आनन्द में
 रहते हैं।

ईश्वरी आनन्द का दूसरा महान फल यह है कि भक्त जब ऐसे
 महा ईश्वरी आनन्द में होते हैं तब उनके हृदय में पाप न हीं छु
 ससकता। ईतना ही नहीं ऐसे ईश्वरी आनन्द के कारण भक्त अ
 पना सुख तज सकते हैं और प्रभु के लिये जगत के जीवों के कल्या
 ण के महान काम कर सकते हैं। क्योंकि ईश्वरी आनन्द से अपना
 ग. स्वार्थ त्यागने तथा दुःख भोगने का बल उनमें आ जाता है। ईस
 से वे दुसरे व्यवहारी मनुष्यों की अपेक्षा बहुत अच्छी तरह
 प्रभु की तलाश तस मुदाय की सेवा कर सकते हैं। याद रखना
 कि वह सब हृदय में मोनूद ईश्वरी आनन्द के कारण होता है
 । हम सब भक्तों के ईसा ईश्वरी आनन्द हासिल करने की
 कोशिश करना चाहिये।

भक्तों के चरीन से हम जानते हैं कि न इतसे भक्तों के सिर पर

पर अनेक प्रकार के दुःख पड़े थे और वह हुने रे भक्तों को अनेक प्रकार की कठिनाई यों देवी व काम करना पड़ा था तथा वह हुने से भक्तों को दरिद्रा वस्था में दिन का ठने पड़े थे। तो श्री-उन्हे हृदय में आनन्द का झरना बहता था; इससे उन्हे हृदय सब दुःखों की परवा न ही होती थी। वह हर से गरीब दिखाने देने हुने से सब वडे भक्त वडे वडे अमीरों यार नाओं से भी अधिक सुखी रहते थे। क्योंकि दुःखिता दारिद्र्य के दुःख से हृदय ही आनन्द उन्हे हृदय में बहता अधिक था। और इसका कारण यह था कि वे आनन्द श्री नीति और भक्ति के रास्ते में चलते थे। उस से वे अनेक प्रकार के वाहरी दुःख रहते हुने भी आनन्द ले सकते थे। हमें भी ऐसा आनन्द लेना होता नीति तथा भक्ति के आनन्दो मासीर्ग में चलना चाहिये और हृदय ही आनन्द हासिल करने की कोशिश करना चाहिये। ऐसा करने भी वह हुने के भक्तों के ऐसा अलौकिक हृदय ही आनन्द मिल सकगा है। हे से अविनाशी हृदय ही आनन्द के लिये चेष्टा करना चाहिये।

